महान विभूति दादा जशन वासवाणी के जीवन की सचित्र झाँकियां



डॉ. दयाल आशा

महान विभूति
दादा जशन वासवाणी
की
जीवन झाँकियां



लेखकः-

डॉ. दयाल कोटूमल धामेजा आशा

२ अगस्त २००२ मूल्य-प्रेम से पढ़कर प्रेरणा प्राप्त करें

रेखा चित्रः राम लालचंदाणी
टाईप व मुद्रणः शोभा लालचंदाणी

प्रकाशक

श्री. चन्द्रलाल कन्हैयालाल मोरयाणी

सरस्वती सागर, उल्हासनगर ४२१ ००१

सदैव हंसमुख - मधुर भाषी



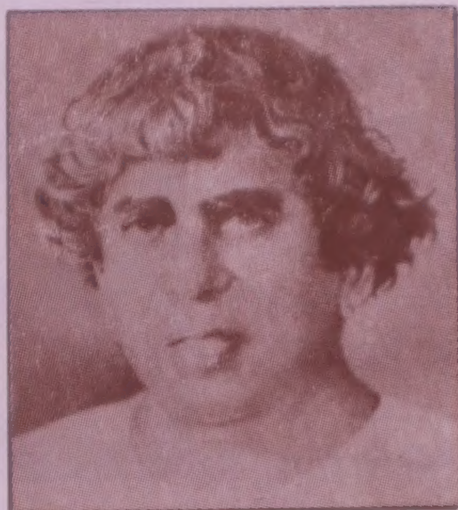
ब्रह्मलीन इन्द्रलाल कन्हैयालाल मोरयाणी

की पावन स्मृति में

चन्द्रलाल कन्हैयालाल मोरयाणी

किशन कन्हैयालाल मोरयाणी

साधु टी .एल वासवाणी की प्यारे जशन वासवाणी को आशीर्वाद



मैं यद्यपि आयु में बड़ा हूँ, किन्तु आध्यात्मिक शक्ति में प्यारा जशन बड़ा है, इसलिए आज मैं इस से आशीर्वाद लेता हूँ। यदि मैं इसके सम्बंध में बातें बताऊँ तो आपके आँखो में आँसू आजायेंगे। इस में बहुत ही गुण हैं, कई शक्तियां हैं। आप और मैं उन शक्तियों का लाभ उठायें। यह केवल सिन्धियों का नहीं किन्तु सभी क़ौमों का है। यह मेरे आँसुओं और प्रार्थना का बालक है। आप को पता नहीं कि मैं इस का आशीर्वाद लेता हूँ। मुझे जानकारी है कि शीघ्र ही मुझे इस संसार से प्रस्थान करना है, इस लिए आज प्यारे जशन से कहना चाहता हूँ कि भारत भूमि मुझे कितनी न प्यारी है ! अब यह पावन भूमि टूटी हुई है। अब तक भारत पूरा स्वतंत्र नहीं है। भारत में प्रांतीयता की भावना बढ़ गई है, चारों ओर तोड़ फोड़ व शोर है ! कई भारतवासी दुखी हैं ! बहुत से लोगों को रहने के लिए मकान नहीं, खाने के लिये अनाज नहीं, पहनने के लिए वस्त्र नहीं ! उनकी दयनीय दशा देखकर मेरा मन भर आता है ! प्यारे जशन तुम दीन दुखियों की जितनी सेवा करसको वह मेरी सेवा समझो। उनके प्रति सहानुभूति रखो। पशु पक्षियों, सभी प्राणियों को अपना स्नेह देते रहना। पूज्य पिताश्री से तुम्हें दया की निधि मिली, उस निधि को बढ़ाते जाओ। दया तुम्हारे जीवन का आदर्श होना चाहिए। दया धर्म का मूल है। दया गंगा समान है। आज विश्व को दया रूपी गंगा की आवश्कता है। तुम अपने जीवन में दया की गंगा प्रवाहित करते रहो, प्यासियों की प्यास बुझाते जाओ ! तप्त ह्रदयों को शीतल बनाते जाओ ! जितना हो सके असहायों की सहायता करते रहो ! भारत के ऋषि मुनियों का आदर्श अपने सामने रखकर भारत की शान ऊँची करना।



गुरूदेव साधु टी. एल वासवाणी अपने योग्य शिष्य प्यारे जशन वासवाणी को स्नेह देते हुए।



बीच में साधु टी. एल वासवाणी, उनकी एक ओर दादा जशन वासवाणी व बहिन शान्ति वासवाणी

उनके चरणों में बहिन हरी देवी वासवाणी एवं बहिन सती थधाणी बैठी हैं।

दादा जशन वासवाणी
की जीवन झाँकियां

सिन्ध की पावन भूमि ने कई संतों व सूफियों को जन्म दिया है, जिनकी सुरभि सिन्ध एवं भारत में फैली हुई है कुछ सिन्धी संतों व सूफियों की सुरभि संसार को सुरभित कर रही है। विश्व विख्यात संत साहित्यकार, शिक्षा शास्त्री, दर्शनिक, महान संत कवि, समाज सुधारक, आध्यात्मिक मार्गदर्शक, दीन दुखियों के मसीहा साधु टी. एल. वासवाणी के उत्तराधिकारी दादा जशन वासवाणी भी स्वामी विवेकानंद एवं स्वामी राम तीर्थ की भाँति अपने विचारों व व्याख्यानों द्वारा विदेशियों को विमुग्ध कर रहे हैं।

दादा जशन वासवाणी अंतर्राष्ट्रीय संत हैं। वे न केवल भारत के भिन्न भिन्न नगरों में परन्तु विश्व के विभिन्न देशों में भ्रमण कर शान्ति, स्मरण, स्नेह, सहानुभूति, सहिष्णुता, सत्य, सेवा, सादगी सद्भावना व मानवता का संदेश देकर लाखों लोगों का मार्गदर्शन कर रहे हैं। वे प्रथम भारतीय हैं जिन्हें यूथांट शान्ति पुरस्कार से विभूषित किया गया है।



दादा जशन का जन्म २ अगस्त सन् १९१८ ई में सिन्ध प्रदेश के हैदरबाद नगर में श्री पहिलाजराय वासवाणी के घर में हुआ। श्री पहिलाजराय वासवाणी विद्वान, ज्ञानवान, शिक्षाशास्त्री, परोपकारी, निष्काम निष्ठावान समाज सेवक, सुधारक व भकत थे। उन्होंने प्रेम मंडली की स्थापना कर कई जन सेवा के कार्य किये। वे प्रभु श्री राम के भक्त थे, वे समाज सुधारक भी थे। उन्होंने विद्या के क्षेत्र में प्रशंसनीय कार्य किया। उनके जीवन में स्मरण - सेवा की सुरभि थी। वे महान विभूति साधु वासवाणी के अग्रज थे।

साधु टी एल वासवाणी बालक जशन के चाचा थे। बालक जशन की

माताश्री कृष्णादेवी ईश्वर आराधिका एवं संत सेविका थी। माता कृष्णादेवी प्रभात को गुरूवाणी का पाठ करती थी। घर के ऐसे धार्मिक वातावरण में बालक जशन का पालन पोषण हुआ। श्री जशन के जन्म का नाम वीरू था। जब उसका जन्म हुआ तब दादा साधु वासवाणी ने उसे अपनी गोद में उठाकर आशीर्वाद दिया। श्री पहिलाजराय वासवाणी को यह प्रथम पुत्र संतान हुई थी इसलिए वे बालक वीरू को जशन कहकर पुकारते थे। जशन का अर्थ है खुशी। आगे चलकर श्री जशन ने अपने नाम को सार्थक किया। अब उनका दर्शन करने से, प्रवचन सुनने से भी प्रसन्नता होती है। वे जहाँ जाते हैं वहाँ जशन होते हैं। वे सभी प्राणियों को खुशी प्रदान करते हैं। वे अपनी वाणी व कर्म द्वारा सबको खुश रखना चाहते हैं।

माता कृष्णा संतान को रामायण, महाभारत एवं अन्य शास्त्रों के दृष्टांत सुनाकर उनमें धार्मिक संस्कार डालती थीं। माता कृष्णा उन्हें श्री जपसाहब, श्री सुखमनी साहब कंठ कराती थीं। माता पिता के उत्तम संस्कारों एवं चाचा साधु वासवाणी के संसर्ग के कारण बालक जशनजी का भविष्य अत्यन्त उज्ज्वल हुआ। श्री पहिलाजराय व माता कृष्णादेवी सौभाग्यशाली थे, जिन्होंने दादा जशन जैसी विभूति को जन्म दिया जो आज लाखों लोगों का मार्गदर्शन कर रहे हैं।

बालक जशन सबेरे उठते ही माँ - बाप को प्रणाम करते थे। वे नहाने के पश्चात् श्री जपसाहब का पाठ कर प्रभु से प्रार्थना करते थे, तत्पश्चात् स्कूल में जाते थे। बालक जशन लिखने पढ़ने में भी प्रवीण एवं तीक्षण बुद्धि छात्र थे। वे सदैव अपनी कक्षा में प्रथम श्रेणी में प्रथम आते थे। वे बचपन से ही विनम्र हैं, इस लिए गुरूजन उन्हें प्यार करते थे। उनकी प्रवीणता के कारण उन्हें स्कूल में समय समय पर पुरस्कार मलते रहते थे। उनकी कक्षा में यदि कोई गरीब विद्यार्थी होता था तो वे अपनी खर्ची से उसे खाने की वस्तुएं खरीद कर देते थे। वे बचपन से ही पशु पक्षियों को प्यार करते हैं, उन्हें खिलाते हैं।

बाल्यावस्था से ही दादा जशन का हृदय माखन की भाँति नर्म था। वे किसी की पीड़ा सहन नहीं कर सकते थे। वे दूसरों का दुख दर्द देखकर पिघल जाते थे। प्यारे जशन जी को दूसरों का दुख दूर करने में प्रसन्नता होती थी। रास्ते से गुजरते यदि वे किसी अपाहिज, गरीब, या फकीर को देखते थे तो अपनी खर्ची भी उसे दे देते थे। वे स्वयं न खाकर दूसरों को खिलाते थे।

बालक जशन नौ वर्ष के थे और चौथी कक्षा में पढ़ते थे तब उनके पिताश्री पहिलाजराय ब्रह्मलीन हुए। साधु वासवाणी ने माता कृष्णा को सांतवना दी। घर में कोई और कमाने वाला नहीं था, इसलिए माता कृष्णा ने इंडियन गर्ल्स स्कूल कराची में अध्यापन कार्य आरंभ किया। घर का खर्चा कम करने के लिए उसने बच्चों को नगर पालिका के एन - जी वी स्कूल में दाखिल किया। उसने संतान की पालना में कोई कमी नहीं छोड़ी।

बालक जशन के मन में बचपन से दया भावना थी। उन्होंने अपने भाई - बहनों से कहा कि सप्ताह में एक बार अपनी खर्ची बचाकर गरीबों को खाना खिलाएं। सभी भाई - बहनों ने यह बात मानी। बालक जशन उन खर्ची के पैसों से ड्बालरोटी एवं भजिया लेकर भिखमंगो अपाहिजों को जाकर खिलाते थे। वे उन्हें आशीर्वाद देते थे। विद्यार्थी जीवन में वे स्काऊट में भी भाग लेते थे। इस लिए वे सदैव सेवा व सहायता कार्य के लिए तैयार रहते थे। यदि उनके कक्षा में कोई विद्यार्थी पढ़ने में कमजोर होता था तो वे उसे पढ़ाते थे। वे स्कूल में समय समय पर व्याख्यान प्रतियोगता में नेताओं व संतों के सम्बांध में व्याख्यान देते थे। वे सदैव प्रतियोगता में प्रथम पुरस्कार प्राप्त करते थे। प्रधान अध्यापक उनकी प्रवीणता से इतना तो प्रभावित हुए कि एक एक वर्ष में विद्यार्थी जशन को दो दो डबल प्रोमोशन दिये। इसलिए तेरह वर्ष की छोटी आयु में उन्होंने मैट्रिक परीक्षा उत्तीर्ण की। पूरे सिन्ध में यह प्रथम उदाहरण था कि १३ वर्ष की आयु में किसी विद्यार्थी ने मैट्रक परीक्षा उत्तीर्ण की हो।

१३ वर्ष की छोटी आयु में वे डी जे सिन्ध कालेज में दाखिल हुए। वे कालेज में अन्य विद्यार्थियों से भिन्न थे। वे अपने अभ्यास में तल्लीन रहते थे। वे कालेज की प्रयोगशाला में नये नये प्रयोग करते रहते थे। वे बुद्धिजीवी एवं रोशन दिमाग थे। इस लिए प्राध्यापक एवं प्राचार्य उन्हें अधिक स्नेह देते थे। प्रोफेसर पलधीकर उन्हें विशेष रूप में प्यार करते थे। उन दिनों दादा साधु वासवाणी ने भी प्राचार्य के पद का त्याग कर सिन्ध के विभिन्न नगरों में जाकर नाम का प्रचार आरंभ किया। जब वे कराची में आते थे तो भाभी कृष्णादेवी के घर में अवश्य आते थे। साधु वासवाणी अपने भतीजे जशन को बहुत प्यार करते थे।

संत जिन पर दया दृष्टि करें वे अत्यंत भाग्यशाली होते हैं। श्री जशन जी भी अपने चाचा साधु वासवाणी की शिक्षाओं व सिद्धांतों से

अत्यन्त प्रभावित हुए। वे दादाजी के जीवन से इतने तो प्रभावित हुए कि वे स्वयं खादी के वस्त्र पहनकर कालेज में जाते थे। युवा अवस्था में ही उन्होंने सादगी अपनाई। वे सदैव मुस्कराते रहते थे। सन् १९३८ ई में जब श्री जशन विज्ञान में अनवेषण करते थे, तब कालेज अधिकारियों ने विज्ञान सम्बंधी एक विशेष यन्त्र खरीद किया। श्री जशनजी उसके द्वारा खोज करते थे।



एक दिन रात को उन्होंने साधु वासवाणी से अनुरोध किया कि प्रयोगशाला में चलकर वह नया यन्त्र देखें। साधु वासवाणी उसी समय ही उनके साथ प्रयोगशाला में गये। उन्होंने वहाँ वह यन्त्र देखा। उसी समय आकाश में तारे चमक रहे थे। श्री जशनजी ने वह यन्त्र चलाकर दादाजी को दिखाया दादाजी ने अपना हाथ उसके नकट रखा तो हाथ की सब पसलियां देखने में आ रही थीं। दादाजी मुस्कराने लगे, उन्होंने उनसे पूछा, कया तुम्हारे पास दूरबीन भी है ? श्री जशन दूरबीन ले आये। पूज्य दादा वासवाणी ने कहा कि बाहर चलकर इस दूरबीन से आकाश में तारे देखो।

श्री जशन, दादा वासवाणी की आज्ञानुसार दूरबीन से तारे देखता है तब वह ऐसा अनुभव कर रहा है कि तारे उसके अत्यन्त निकट चमक रहे हैं। उसी समय दादाजी ने उसे कहा कि दूरबीन के कांच को फूंक देकर देखो। फूंक देने के कारण उसी दूरबीन से उसे कुछ दिखाई नहीं दिया। उसी समय साधु वासवाणी ने मुस्कराते हुए उन्हें समझाया, मेरे बालक यह है अहम् का, अज्ञान का परदा जो तुम्हारे और श्री श्याम

सुंदर के बीच में है। यह अविद्या का पटल दूर करो तो तुम्हे सर्वत्र, सभी में भगवान का दर्शन होगा।

१७ वर्ष की छोटी आयु में श्री जशन ने बी.एस.सी की परीक्षा उत्तीर्ण की। यह सिन्धी जाति के लिए गैरव की बात थी। वे उसी कालेज में नियुक्त हुए, साथ साथ उन्होंने एम.एस सी का अभ्यास भी आरंभ किया। १९ वर्ष में उन्होंने बम्बाई विश्वविद्यालय से एम. एससी. की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। यह भी सिन्धी जाति के लिए अत्यन्त गौरव की बात थी। उन्होंने फिज़क में ऐकरारे के सम्बाध में खोज की थी, विश्व विख्यात विज्ञानी सी. वी. रामन उनके शोघ प्रबंध के निरीक्षक थे। दादा जशन चाहते तो वे महान विज्ञानी बन सकते थे किन्तु वे भौतिक विज्ञानी न बनकर सच्चे विज्ञानी बने। वि का अर्थ है विशेष और ज्ञानी, जिसे ज्ञान हो। उन्हें सच्चा अध्यात्मिक ज्ञान है। वे आज इस आध्यात्मिक ज्ञान द्वारा लाखों लोगों का मार्गदर्शन कर रहे हैं। यह ज्ञान किसी प्रयोग शाला या पुस्तकालय से प्राप्त नहीं होता। आध्यात्मिक ज्ञान तो संतों महात्माओं के संग, संसर्ग, सेवा से मिलता है। श्री जशन वासवाणी सौभाग्यशाली थे उन्हें साधु टे. एल वासवाणी गुरू रूप में प्राप्त हुए। उन्हें दादा वासवाणी का संग एवं सेवा का सुअवसर मिला। वे अध्ययन एवं अध्यापन करते दादा साधु वासवाणी की सेवा में तत्पर रहते थे। साधु वासवाणी उन्हें समय समय पर शिक्षा देते मार्गदर्शन करते थे।

दादा जशनजी को गुरदेव साधु वासवाणी के संग एवं सेवा में ही आनंद आता था, उन्हें कोई सांसारिक प्रलोभन आकर्षित नहीं कर सका। माता कृष्णा की इच्छा थी कि उसका बेटा विवाह करे किन्तु प्यारे श्री जशन आजीवन ब्रह्मचारी रहे। वे सदैव गुरूदेव साधु वासवाणी के साथ भ्रमण करते या हैदराबाद कराची में रहते उनकी सेवा में सक्रय रहे।

देश विभाजन के कारण भाई जशन अपने गुरूदेव साधु वासवाणी के साथ १६ नवम्बर सन् १९४८ ई में भारत में आये। पहले वे कुछ समय मुम्बाई में श्री दुर्गादास पंजाबी के घर में ठहरे। वे गुरूदेव की सेवा करते रहे। मुम्बई में रहते उन्हें बड़ा पद मिल रहा था किन्तु उन्होंने सर्वस्व गुरूदेव दादा साधु वासवाणी के चरणों में अर्पित किया। फरवरी सन् १९४९ में साधु वासवाणी पूणे में आकर बसे और वहाँ उन्होंने सत्संग व सेवा की ज्योति जगाई। प्यारे भाई जशन वासवाणी भी

गुरूदेव के साथ रहकर उनके सेवा कार्यों में सक्रय रहे। देश विभाजन के कारण भारत में विभिन्न मिल्ट्री कैम्पस में सिन्धियों को बसाया गया। दादा वासवाणी सिन्धी भाई बहिनों को सांतवना देने के लिए प्यारे जशनजी के साथ गये।

दादा साधु वासवाणी की प्रेरणा व आशीर्वाद से श्री गंगाराम साजनदास ने पुणे में मीरा स्कूल आरंभ किया एवं ब्रदर हुड संस्था की ओर से जन - सेवा के कार्य आरंभ किये गये। दादा जशनजी भी इन सेवा कार्यों में सक्रय रहे। दादा जशन ने अंग्रेजी में एक पत्रिक का सम्पादन व प्रकाशन भी किया। अमेरिका के इन्टर नैश्नल अकादमी ने उनकी पुस्तक द स्टोरी आफ सिम्पुल मैन पर उन्हें पी. एच्छ. डी की मानद उपधि दी, जिसको नाम की उपधि मिल गई वह साँसारिक उपाधियों को क्या करेगा !

दादा जशनजी ने अंग्रेजी में ईस्ट एंड वेस्ट मासिक प्रत्रिका का सम्पादन किया। उस में वे साधु वासवाणी, एवं अन्य सन्तों, तत्वज्ञानियों के आध्यात्मिक विषयों सम्बंधी लेख एवं कविताएं प्रकाशित करते थे। वे स्वयं भी ज्ञानवान व विद्वान हैं, उनके भी लेख उस में प्रकाशित होते थे। इस पत्रिका ने भी सत्मार्ग प्रशस्त किया। वे होम्योथी की भी अच्छी जानकारी रखतें हैं। वे प्रेमियों को होम्योपथी की दवाईयाँ देकर रोग मुकत करते थे। उनकी मुस्कान व सहानुभूति भी बीमार का दुख दूर कर देती थी।

एक दिन सबेरे साधु वासवाणी टहलने के लिए निकले। उनके साथ प्यारे जशन जी, बहिन शान्ति और अन्य प्रेमी भी थे। रास्ते में एक आदमी दो मुर्गियों की टांगे बांधकर उन्हें ले जा रहा था। उसी समय साधु वासवाणी ने श्री जशन से पूछा कि वह आदमी मुर्गियों की टांगे बांधकर कयों ले जा रहा है ? श्री जशनजी ने कहा कि वह आदमी उन मुर्गियों को काट कर बेचेगा या स्वयं खायेगा। साधु वासवाणी ने कहा, उसे रोको। वह व्यक्ति साधु वासवाणी के निकट आया। उन्होंने उससे पूछा ये दोनों मुर्गियाँ कितने में बेचोगे। उस व्यक्ति ने जितने पैसे माँगे साधु वासवाणीजी ने उतने पैसे उसे दे दिये और श्री जशन से कहा कि अब मुर्गियों को मीरा भूमि में ले चलो और इनके खाने की भी व्यवस्था करो। आज भी प्रतिदिन सवेरे दादा जशन पक्षियों को अन्न खिलाते हैं, पानी पिलाते हैं। साधु वासवाणी यात्री आश्रम में आजकल इस प्रकार की सेवा की जाती हैं। संत कितने न दयालु होते हैं। वे पशु पक्षियों

की पीड़ा भी स्व पीड़ा समझकर उसे दूर करने का प्रयास करते है। श्री जशन जी मुर्गियों को मीरा भूमि में ले आये और उनके रहने व खान पान की व्यवस्था भी की।

गुरुदेव साधु वासवाणी ने अपने परम प्यारे श्री जशन को आज्ञा की कि वे मीरा कालेज के प्राचार्य का पद ग्रहण करें। गुरूदेव की आज्ञा शिरोधार्य कर उन्हों ने मीरा कालेज की बागडोर ले ली। मीरा कालेज की छात्राएं भाग्यवान थीं कि उन्हें प्यारे दादा जशन प्राचार्य के रूप में प्राप्त हुए। दादा जशन ने छात्राओं में प्रार्थना, पवित्रता, सत्य सादगी, सेवा, सहानुभूति व स्मरण के बीज बोए। उन्होंने मीरा कालेज में ज्ञान व भक्ति की गंगा प्रवाहित की। विद्यार्थी एवं प्राध्यापक उनका व्याख्यान श्रवण करने के लिए उत्सक रहते थे। वे उनका दर्शन कर भी धन्य धन्य होते थे। दादाजी ने विद्यार्थियों को न केवल पुस्तकीय ज्ञान दिया किन्तु जीवन उपयोगी और आध्यात्मिक ज्ञान भी दिया।

१६ जनवरी सत् १९६६ महान विभूति, आध्यात्मिक मार्गदर्शक साधु वासवाणी ब्रह्मलीन हुए। उनके विरह में दादा जशन ने कई हृदय स्पर्शी गीत लिखे, उन गीतों से उनकी अनन्य गुरू भक्ति भावना प्रति भासित होती है। गुरूदेव साधु वासवाणी की अदृष्ट असीम अनुकम्पा से दादा जशन मीरा भूमि में सत्संग व सेवा की ज्योती जगा रहे हैं।

साधु टी. एल वासवाणी के ब्रह्मलीन होने के कुछ वर्ष पश्चात् उनकी पावन स्मृति में ब्रदर हुड संस्था का नाम साधु वासवाणी मिशन रखा गया। दादा जशन के मार्गदर्शन में ही यह मिशन शिक्षा व सेवा के क्षेत्र में प्रशंसनीय कार्य कर रहा है।

दादा जशन ने अपनी साधना व स्नेहयुक्त मधुर स्वभाव द्वारा मीरा भूमि को प्रेम भूमि व कर्म भूमि बना दिया है। उन्होंने अपने विचारों व व्याख्यानों द्वारा लाखों लोगों को आकर्षित किया है। उनकी प्रेरणा व आशीर्वाद से साधु वासवाणी मिशन की ओर से इन्लैक बुधराणी हास्पीटल व रीसर्च सेंटर बड़े पैमाने पर चल रहा है और नेत्रों के उपचार के लिए कुंदनाणी अस्पताल एवं दिल के बीमारी के लिए बाबा गंगाराम हार्ट यून्ट बन रहे हैं। दादा जशन वासवाणी भारत व विदेश के विभिन्न नगरों में जाकर हजारों सोए हुए लोगों को अज्ञान की नींद से जाग्रत् करते है, गुरूदेव साधु वासवाणी एवं ऋषि - मुनियों का संदेश देते है। नाम का अमृत पिलाते है। उन्हों ने कई नगरों में साधु वासवाणी मिशन के केन्द्र स्थापित कर स्मरण व सेवा की ज्योति जगाई है।

उनके आशीर्वाद से कुछ नगरों में साधु वासवाणी स्कूल, साधु वासवाणी कालेज एवं साधु वासवाणी अस्पताले स्थापित हुई हैं और कई लोक कल्याण के कार्य हो रहे हैं।



दादा जशन वासवाणी भारतीय ऋषि मुनियों के प्रतीक हैं। वे देश - विदेश के विभिन्ना नगरों में जाकर भारतीय संस्कृति सम्यता का संदेश देते हैं, स्मरण सेवा स्नेह सहानुभूति व करूणा की ज्योती जगाते हैं। वे महान विद्वान, शिक्षा शास्त्री, दर्शनिक, आध्यात्मिक मार्ग दर्शक कर्मयोगी संत, समाज सेवक पशु पक्षियों के रक्षक, भक्त कवि, दया व विनम्रता की मूर्ति हैं। उनकी पेशानी से नूरानी नूर झलकता है। उनके वचनों - वाणी में चुम्बक से अधिक आकर्षण है। उनका दर्शन करने से और प्रवचन श्रवण करने से दुख दर्द दूर हो जाते हैं, तनाव खत्म हो जाता है। उनकी मधुर मुस्कान आत्मा को आनंद देती है। उनके आशीर्वाद की किरणें मुश्किल को आसान करती हैं।

दादा जशन वासवाणी वर्तमान युग के अंतर्राष्ट्रीय संत हैं। उन्होंने एकता, प्रेम, दया मैत्री का ऐसा तो प्रभावोपादक प्रचार किया है कि सब ही जातियों के लोगों के मन में उनके प्रति श्रद्धा व सम्मान की भावना है। टी.वी. पर उनका प्रवचन श्रवण करने के लिए लोग उत्सुक रहते हैं। उन्हें समय समय पर विश्व जीव दया सम्मेलन एवं स्वामी विवेकानंद शताब्दी समारोह एवं अन्य विश्व सम्मेलनों में आमंत्रित किया गया। उन्होंने अपने ज्ञान गर्भित व्याख्यानों द्वारा श्रोताओं को स्वामी रामतीर्थ, स्वामी विवेकानंद, साधु टी. एल. वासवाणी की भाँति मंत्र मुग्ध कर

दिया। ऐसी महान विभूति पर न केवल सिन्धी जाति को किन्तु भारत को गर्व है। उन्हें लाखों रूपये भेंट स्वरूप मिलते हैं, वे वह माया दीन दुखियों, लोक कल्याण के कार्यों में तत्काल ही अर्पित करते हैं। वे त्याग तपस्या की तस्वीर हैं। वे पर पीड़ा को स्वपीडा समझकर शीघ्र ही उसे दूर करने का यत्न करते हैं। दूसरों का दुख दर्द देखकर उनका मन पिघल जाता है। साधु टी. एल. वासवाणी की अदृष्ट कृपा एवं दादा जशन की प्रेरणा व पुरूषार्थ से मीरा भूमि पुणे में अनेक सेवा कार्य चल रहे है। अब मीरा भूमि कर्म भूमि बन गई है। प्रति दिन न केवल गरीबों को खाना खिलाया जाता है किन्तु पशु पक्षियों को भी खाना खिलाया जाता है।

दादा जशन इनलैक बुधराणी हास्पीटल में स्वयं जाकर बीमारों की देखरेख करते हैं, सहानुभूति दिखाते हुए बीमारों को स्नेह देते हैं। वे स्वयं मीरा स्कूलों और मीरा कालेज में जाकर विद्यार्थियों में प्रार्थना, पवित्रता, प्रेम, सत्य, सेवा, सादगी, स्मरण सहानुभूति के बीज बोते हैं। उनकी प्ररेणा से विभिन्न नगरों में अनेक सेवा के कार्य आरंभ हुए हैं। वे एक व्यक्ति नहीं स्वयं एक संस्था हैं।

दादा जशन विदेश में थे, तब लातूर में भूकम्प हुआ। दादाजी यह दुःखद समाचार सुनकर पिघल गये। उन्होंने वहाँ प्रेमियों से भूकम्प पीड़ितों की सहायता के लिए अनुरोध किया और लाखों रूपये सेवा कार्य के लिए संग्रहकर भारत में भेजे। साधु वासवाणी मिशन की ओर से उन पैसों से लातूर में पीड़ितों के निवास के लिए घर बनाये गये। भारत के किसी भी प्रांत में यदि कोई आपति आती है तो दादा जशन शीघ्र ही वहाँ पीड़ितों के लिए सहायता भेजते हैं। उनका जीवन अर्पणम् का जीवन है।

दादा जशन जी ने सत् साहित्य का सृजन भी किया है। उनकी कई पुस्तकें सिन्धीं एवं अंग्रेजी में प्रकाशित हुई हैं। उनकी पुस्तकें भी व्यवहार एवं परमार्थ की प्रगति के लिए हमारा मार्गदर्शन करती हैं।

साधु टी. एल वासवाणी की मीरा भूमि आज भक्ति ज्ञान व कर्म की त्रिवेणी बन गई है। सच्चा सुपुत्र वह जो अपने पिताश्री की ज्योति जगाता रहे, सच्चा शिष्य वह है जो अपने गुरू का नाम रोशन करे। दादा जशन वासवाणी भी अपने गुरूदेव साधु टी. एल वासवाणी की सुरभि व संदेश सारे विश्व में फैला रहे है। उनके ही मार्गदर्शन में साधु वासवाणी मिशन अनेक लोक कल्याण के कार्य कर रहा है।

दादा जशन का जीवन प्रेरणा का स्रोत है। उनकी जीवन झांकियों का अवलोकन व अभ्यास कर हम भी प्रेरणा प्राप्त कर जीवन सफल करें।

दयालु बालक जशन



बालक जशन बाल्यावस्था में एक बार कराची में बाजार से गुजर रहे थे तो अचानक उनकी नजर एक खिलौनों के दुकान पर पड़ी। वे उसी दुकान पर गये, वहाँ भाँति भाँति के खिलौने पड़े थे। उन खिलौनों में पटरी पर चलने वाली एक रेल गाड़ी भी थी, बालक जशन की इच्छा हुई कि वह रेल गाड़ी खरीद करे। उसने दुकानदार से उसका भाव पूछा। दुकानदार ने कहा कि इसका मूल्य दो रुपया है। उत्तर सुनकर बालक विचार में पड़ गये। उन दिनों दो रूपये का बड़ा मूल्य था, एक दो पाई खर्ची मिलती थी। एक पैसे में तीन पाइयाँ होती थी और एक रूपये में ६४ पैसे होते थे । बालक ने सोचा कि खर्ची के पैसे बचाकर रेल गाड़ी खरीद करूंगा। बालक जशन घर आये और प्रतिदिन खर्ची से पैसा पैसा बचाकर संग्रह करने लगे। कभी कभी वे उसी दुकान पर जाकर उस रेल गाड़ी का भाव पूछते थे कि हो सकता है कि उसका भाव कम हुआ हो। थोड़े ही दिनों में बालक जशनजी के मामा घर में आये। उसने चाँदी का एक रूपया उन्हें खर्ची के रूप में दिया। बालक जशन फूले नहीं समाये। वे शीघ्र ही रेल गाड़ी खरीद करने के लिए बाजार में गये। उसी बाजार में एक गरीब माता अपने बीमार छोटे

बालक को लेकर करूण स्वर से पुकार रही थी कि प्रभु के नाम इस बीमार नन्हे की दवाई और दूध के लिए एक दो रूपये दो। कई लोग वहाँ से गुजर रहे थे, किन्तु किसी को भी उस पर दया नहीं आई। बालक जशन ने भी उस माता की करूण पुकार सुनी किन्तु खिलौने खरीद करने की तमन्ना उन्हें खिलौने के दुकान पर ले गई। उन्होंने दुकानदार से कहा कि मैं वह रेल गाड़ी खरीद करने के लिए आया हूँ, वह खिलौना निकालो ! दुकानदार भी यह सुनकर खुश हुआ। उसने वह रेल गाड़ी निकाल कर बालक जशन को दी, तब वह गरीब माता पुकारती हुई उसी दुकान पर आई। बालक जशन उस बालक का क्रंदन और माँ की करूण पुकार सुनकर पिघल गये। उन्होंने वे चाँदी के रूपये उसी माई को दे दिये और रेल गाड़ी दुकानदार को लौटा दी। दुकानदार यह दृश्य देखकर आश्चर्य में पड़ गया कि यह कोई अजीब बालक है ! वह माता बालक जशन को दुआएं देती चली गई।

बालक जशन को कई दिनों से रेल गाड़ी खरीद करने की तमन्ना थी किन्तु उन्होंने एक गरीब मासूम बालक का जीवन बचाने के लिए अपनी इच्छा का त्याग किया। दीन दुखियों, माँ बाप और संतों का आशीर्वाद मनुष्य को महान बनाता है।

दया की मूर्ति दादा जशन

एक बार दादा जशन मोटर कार में जा रहे थे, तो उन्होंने फुटपाथ पर एक बीमार को देखा, जो अत्यन्त व्यथित था। उसी समय दादाजी ने मोटकार से उतरकर बीमार से सहानुभूति से बातचीत की। वह असहाय बीमार एक महीने से वहाँ पड़ा हुआ था। दादा जशन पर पीड़ा को स्व पीड़ा समझते हैं। उसी समय दादाजी ने उस बीमार को वहाँ से उठाकर दूसरी जगह पर रखवाया। उसे अपने हाथों से पानी व दूध पिलाया। वे उस बीमार के उपचार की व्यवस्था करने के पश्चात् मोटरकार में बैठे। संत दूसरों के दुख का कितना न अहिसास कर, उस दुख को दूर करने का प्रयास करते हैं।

एक दिन पूणे में दादा जशन टहलने के लिए निकले, रास्ते में उन्होंने एक व्योवृद्ध को देखा। उन्होंने उसके निकट जाकर उससे बातचीत की। उसी समय ही वे उस वृद्ध को मीरा भूमि में ले आये। उस बूढ़े के पाँव कीचड़ से भरे थे। दादाजी ने स्वयं उसके पाँव धोकर उसे नये

वस्त्र पहनाये, खाना खिलाया और कुछ वस्तुएं भेट दी, किन्तु सब से अधिक उसे अपना प्यार दिया। वह बूढ़ा अत्यन्त प्रसन्न हुआ। ऐसा लगता था कि जैसे श्री कृष्णा व सुदामा का संगम हुआ है।

ठंडी की मौसूम में आधी रात को दादा जशन सेवकों के साथ कंबल लेकर रास्तों पर सोए बे सहारे लोगों पर कंबल डालकर उनकी कंपन कम करते हैं। वे आधी रात को अपनी नींद व स्वास्थ्य का ख्याल न कर पीड़ितों को सुखी करते हैं।

गहन अध्ययनशील



दादा जशन विद्यार्थी जीवन से ही गहन, अध्ययन करते हैं। उनके मन में पुस्तक पढ़ने की जो रूचि बचपन में थी, अब भी है। उन्होंने हजारों पुस्तकें पढ़ी हैं, उन का चिन्तन भी किया है। वे तीक्षण बुद्धि हैं। अब इसी अवस्था एवं आध्यात्मिक ऊंचाई की शिखर पर पहुँचते भी वे नई नई पुस्तकें पढ़ते हैं। मुम्बाई, दिल्ली या किसे बड़े नगर में जाते हैं तो वे स्वयं पुस्तकों की दुकान पर जाकर नये प्रकाशन का अवलोकन कर पुस्तकें खरीद करते हैं। वे महान विद्वान होते हुए भी पुस्तकों का अभ्यास करते हैं। हमें भी अपने मन में पुस्तकें पढ़ने व चिन्तन करने की रूचि उत्पन्न करनी चाहिए।

अपाहिजों की सेवा।



दादाजी बीमारों अपाहिजों को भी कितना प्यार करते हैं। वे सारे संसार को अपना परिवार समझते हैं ।एक बार दादा जशन बड़ोदा में अपाहिज बच्चों के आश्रम में गये। वहाँ उन्होंने अपाहिजों की आपरेशन शिविर का उद्घाटन करते हुए कहा कि जहाँ दीन दुखियों, अपाहिजों, बीमारों की सेवा की जाती है, वहाँ भगवान विद्यमान हैं। आप यदि प्रभु को प्रसन्न करना चाहते हैं तो अपाहिजों, दीन दुखियों अनाथों की निष्काम भावना से सेवा करें। दादाजी ने उसी समय अपाहिज बच्चों को खाने के लिए आईस्करीम एवं अन्य वस्तुएं दी। इन वस्तुओं से अधिक दादाजी ने उन्हें अपना प्यार दिया। उसी समय बच्चों के मुख पर विचित्र मुस्कान थी।

बाढ़ पिड़ितों की सहायता

१२ जुलाइ सन् १९६१ में पुणे में बाढ़ आई, नगर के कुछ बसतियों में पानी आ गया। बाढ़ के कारण कई लोग निराश्रय हो गये, उनके घरों का सर्वस्व बाढ़ में खत्म हो गया, कुछ मकान, दुकान एवं झोपड़ियों की हानि हुई। दादा साधु वासवाणी ने तत्काल ही प्यारे श्री जशन से कहा कि घटना स्थल पर जाकर बाढ़ पीड़ितों की सेवा करें। दादा जशन तैयार खाना, कंबल, चदर, वस्त्र एवं कुछ आवश्यक वस्तुएं

लेकर सेवकों के साथ घटना स्थल पर गये। वहाँ उन्होंने बाढ़ पीड़ितों को सहानुभूति दिखाते सांतवना दी, खाना खिलाया और साथ में लाई हुई वस्तुएं बॉटी।

दादा जशन ने दादा गंगाराम से बातचीत कर कुछ दिनों के लिए मीरा हाय स्कूल बंद कर बाढ़ पीड़ित निराश्रय कुछ परिवारों को मीरा स्कूल में आश्रय दिया। वहाँ भाई जशन, दादा गंगाराम, बहिन शान्ति, एवं अन्य सेवक बाढ़ पीड़ितों की सेवा करते रहे। समय की सहायता का बड़ा महत्व है।

कुष्ठ रोगियों की सेवा

२ अक्तूबर सन १९६७ दुपहर को दादा जशन पुणे की कुष्ठ रोगियों की अस्पताल में गये। वहाँ पहले नाम कीर्तन हुआ, तत्पश्चात् दादाजी ने कुष्ठ रोगियों को सांतवना देते हुए कहा कि आप भी हमारे भाई - बहिने हैं। आप यहाँ आज की भाँति मिलकर प्रति दिन प्रभु को प्रार्थना करें, मधुर भजन गाएं। दादाजी ने रोगियों को भोजन खिलाया।

दादा जशन खटमंडू के नीलकंट मंदिर में गये, वहाँ उन्होंने भगवान शंकर का दर्शन किया। मंदिर के निकट एक कुष्ठ रोगी सोया हुआ था, दादाजी उसके निकट गये। उन्होंने अपना रूमाल निकालकर उस रोगी का रोग रूमाल से साफ किया। उसे खाना खिलाकर, पानी पिलाया। दादाजी ने उसे एक सौ रूपये खर्ची भी दी। वह कुष्ठ रोगी कितना न प्रसन्न हुआ!

खटमंडू में सेवा

खटमंडू में बहुत ठंडी थी। दादाजी कंबल खरीद कर रात के समय खटमंडू की कुछ ऐसी बसतियों में गये जहाँ कुछ लोग बाहर ठंडी में सोए हुए थे। दादाजी उनकी कंपन कम करने के लिए उन पर कंबल डालते गये। दादाजी सेवा व सहानुभूति की सूरत हैं।

हरीजनों को प्यार

दादा जशन ब्रह्मज्ञानी हैं। वे सभी प्राणियों का प्यार करते हैं। उनके मन में हरिजनों के प्रति भी सद् भावना व स्नेह है। २ जनवरी १९६७ वे पुणे की हरिजन कालोनी में पधारे। पहले हरिजन भाई बहिनों ने भजन गाये। दादाजी ने उन्हें सम्बोधित करते हुए कहा कि

आप हमारे समाज के अभिन्न अंग हैं। हम सब भारत माता की संतान हैं। हम सब एक हैं, हम सब को गले लगाएं। जैसे आज आपने मधुर भजन गाये, ऐसे भजन प्रतिदिन मिलकर गाएं। प्रभु से प्रार्थना है कि आपके जीवन में परिवर्तन आजाए। दादा जशन ने स्वयं हरिजनों को खाना खिलाया और उन्हें वस्त्र दिये।

बीमारों की देख भाल व सेवा

दादा जशन के मन में बीमारों के प्रति स्नेह व सहानुभूति की भावना बचपन से है। वे पुणे के सासून अस्पाल एवं अन्य अस्पतालों में जाकर बीमारों की देखभाल करते थे, उनकी सेवा करते थे, उन्हें फल व दवाइयां देते थे। अब भी यह सेवा कार्य साधु वासवाणी मिशन की ओर



से किया जाता है।

दादा जशनजी ने बीमारों को स्वस्थ करने के लिए साधु वासवाणी मिशन की ओर से इन्लेके बुद्धराणी हास्पीटल बनाया है, जहाँ विभिन्न बीमारियों के विशेषज्ञ डाक्टर बीमारों का उपचार करते है। दादा जशन प्रति दिन इस अस्पताल में जाकर स्वयं देख भाल करते हैं, बीमारों से मुस्कराते मिलते हैं, उन्हें आशीर्वाद देते है ?

दादा जशन कोलम्बो की एक अस्पताल में गये। वहाँ १३० बीमार रहते थे, जिनका उपचार सम्भव नहीं था। दादाजी उनके साथ मुस्कराते हुए मिले और उन्हें कुछ वस्तुएं भेंट की।

भूखों को खिलाएं

बालक जशन के मन में बचपन से दया व सहानुभूति की भावना है। एक दिन उन्होंने अपने भाइयों एवं बहिनों से कहा कि हम सब सप्ताह में एक दिन की खर्ची बचाकर, उन पैसों से खाना बनाकर भूखों को खिलाएं। उन दिनों में एक या दो पैसा खर्ची मिलती थी। रूपये में ६४ पैसे होते थे। एक पैसे में तीन पाइयाँ होती थी। एक पाई की भी वस्तु मिलती थी। प्यारे बालक जशन अपने परिवार के सभी सदस्यों से सप्ताह में एक दिन की खर्ची लेकर उन पैसों से डबल रोटियां व पकोड़े खरीद कर भूखे अपाहिजों व यतीमों को खिलाते थे, उन्हें अपने हाथों से पानी पिलाते थे। वे भूखे, फकीर, अनाथ उन्हें आशीर्वाद देते थे।

दादा जशन कहते है कि हमें स्वयं कम खाकर भूखों को खिलाना चाहिए प्यासियों की प्यास पूरी करनी चाहिए वस्त्रहीनों को वस्त्र दान करना चाहिए। देने में ही जीवन का आनंद है। आज भी दादा जशन ऐसे परोपकार के कार्य न केवल स्वयं करते हैं किन्तु प्रेमियों को भी ऐसे सेवा कार्य करने के लिए प्रेरित करते हैं। आज भी उनकी आज्ञा व प्रेरणा से साधु वासवाणी यात्री आश्रम में प्रति दिन सबुह को भूखों, भिखारियों, अपाहिजों को सस्नेह खाना खिलाया जाता है। एक दिन पुणे में दादाजी ने प्रवचन करते हुए प्रेमियों से आग्रह किया कि आप सप्ताह में शुक्रवार के दिन अपने एक समय का भोजन न खाकर वह भोजन टिफन में लेकर यहाँ आयें तो हम सब मिलकर भूखों को खिलायें। शुक्रवार के दिन कई प्रेमी अपना अपना भोजन लेकर आये। दादाजी भी अपना भोजन लेकर उनके साथ गरीबों, अनाथों की बसती में गये। कुछ घरों में उनके बच्चे भूख के कारण तड़प रहे थे। अचानक बना बनाया भोजन खाकर सब प्रसन्न हुए। दादा जशन के स्नेह व मधुर मुस्कान से वे फूले नहीं समाये। सबने गरीबों असहायों को खाना खिलाकर उनकी भूख मिटाई। कई शुक्रवार यह सेवा कार्य चलता रहा।

एक बार दादा जशन ने प्रवचन करते हुए प्रेमियों से कहा कि आप भूखों की भूख मिटाएं, प्रति दिन किसी न किसी भूखे को खाना खिलाएं। आज भारत में लाखों लोगों को पेट भर खाना नहीं मिलता कुछ लोग पेड़ों के पते खाकर भूख मिटाते हैं, आज कल हमारे घरों में रिफ्रीजेटर हैं, पहले रात को जो खाना बच जाता था दूसरे दिन वह खाना फकीरों व भूखों को खिलाया जाता था, किन्तु आज कल लोग बचा हुआ खाना रिफ्रीजेटरों में रखकर स्वयं खाते हैं। इस लिए मैं रिफ्रीजरेट्रों को चोर कहता हूँ। क्या बचे बाँसी खाने पर भी क्या गरीबों का अधिकार नहीं है! उनकी भूख मिटाएं तो प्रभु आपकी सांसारिक भूख मिटाएंगे।

कैदियों के प्रति स्नेह



दादा जशन गुनाहगारों कैदियों को भी प्यार करते हैं। वे संत विनोबा भावे की भाँति उनका हार्दिक परिवर्तन करना चाहते हैं। एक बार वे बड़ोदा में प्यारे मोतीराम रोचलाणी के अनुरोध पर सेंट्रल जेल में गये। वहाँ दादाजी कई कैदियों के साथ सस्नेह मिले। दादाजी ने उन्हें इतना तो प्यार दिया कि कुछ कैदियों की आँखों से पश्चात्ताप के आँसू गिर पड़े। दादाजी ने उन्हें सम्बोधित करते हुए कहा कि हम सब एक परमात्मा की संतान हैं। प्रभु हम सब को एक सरीका प्यार करते है। हम केवल प्रभु को प्रेम से पुकारें प्रभु हमें साफ करो, निर्मल बनाओ। जैसे एक माता बालक की पुकार सुनकर उसे गले लगाती है, प्रभु भी हमारी पुकार सुनकर अपना बनायेंगे। आप भी अपने गुनाहों का पश्चात्ताप करते हुए प्रभु से प्रार्थना करें, तो आपका जीवन नया बन जायेगा।

रत्नाकर बड़ा डाकू था, उसने कई निर्दोषों को लूटा मारा। एक बार श्री नारद उसे समझाते हैं कि जिन सम्बंधियों की पालना के लिए तुम यह पाप कर्म करते हो वे सम्बंधी तुम्हें साथ नहीं देंगे, तुम्हें ही पाप कर्मों का फल भुगतना पड़ेगा। रत्नाकर घर जाकर परिवार के एक एक सदस्य से मिलता है और उनसे पूछता है कि क्या वे उसे अशुभ पाप कर्म का फल भुगतने में साथ देंगे ? सब सदस्य उसे कहते है, हमारा पालन पोषण करना तुम्हारा कर्तव्य है, वह तुम कैसे करते हो उस से

हमारा क्या सरोकार। हम तुम्हारे किये हुए पाप कर्मो के फल में सहायक नहीं होंगे। रत्नाकर निराश होकर लौटता है। श्री नारद उसकी आँखे खोलता है और राम नाम का मंत्र देता है। राम नाम का मंत्र जपते वह बड़ा डाकू, भारत का महाऋषि वाल्मीकि के नाम से प्रसिद्ध होता है। अब उन्हें भारत का आदि कवि माना जाता है। मेरे भाइयो ! आप निराश नहीं बनें, यहाँ आप नाम स्मरण करें और किये हुए पापों का पश्चाताप करें तो आपके जीवन में परिवर्तन आजायेगा। आप भी ऋषि वाल्मीकि की भाँति महान बन सकतें हैं।

पीड़ित सिन्धी समाज को सांतवना सहानुभूति

दादा जशन किसी का भी दुख दर्द, अत्याचार सहन नहीं कर सकते हैं। वे दूसरों का दुख दूर करने में आनंद का अनुभव करते हैं। सन् १९८० में गोधरा में कुछ कट्टर मुस्लमानों ने सिन्धी समाज पर अत्याचार किये। उन्होंने कुछ सिन्धी मकानों को आग लगा दी। कुछ लोग आग में भस्म हो गये। दादा जशन, श्री नारी गुरूसहाणी के साथ उन पीड़ित परिवारों की सहायता व सहानुभूति के लिए गोधरा में पधारे। वहाँ दादाजी ने सिन्धी समाज को सांतवना देते हुए कहा कि आपका दुखमय समाचार सुनकर मेरा मन भर आया है। प्यारे प्रभु से प्रार्थना करें कि शक्ति दो, हम सब एकता के सूत्र में बंधकर सामना कर सकें। युवा पीढ़ी से मेरा अनुरोध है कि वे व्यायाम कर बहादुर बनें। शारीरिक व मानसिक शक्ति प्राप्त कर अपनी व समाज की सुरक्षा करें। जिन लोगों ने यहाँ अत्याचार किया है, आप उन्हें प्यार दें, क्यों कि अंधकार प्रकाश से दूर होता है। भगवान उनको सुमति दे ताकि वे नेक बनें। आप प्रभु को नहीं भुलाएं, मिलकर नाम कीर्तन करें। प्रभु आपकी सदैव रक्षा करेगा।

दादा जशन उन परिवारों के घरों में गये जिनके ज़िन्दह बच्चे जलाये गये थे, जिनके घर व दुकान भस्म किये गये थे। दादाजी ने उन्हें सहानुभूति से सांतवना दी। उसी समय दादाजी की आँखों में आँसू आ गये। दादाजी ने उन्हें आर्थिक सहायता दी, कंबल व अन्य वस्तुएं दीं, सब से अधिक अपना स्नेह व सहानुभूति दी। उन्होंने कहा कि आपस में मिलकर नाम कीर्तन करें, प्रभु को नहीं भूलें, वह आपका सहायक बनेगा।

दूसरों के दुख की चिन्ता

जय हिन्द अकादमी सिन्धुनगर के एक उत्सव के सम्बंध में दादाजी दुपहर ११ बजे पधारे। मंच पर तो मंडप था किन्तु नीचे जहाँ विद्यार्थी बैठे थे, वहाँ मंडप नहीं लगाया गया था। दादाजी ने विद्यार्थियों को सम्बोधित करते शिक्षा प्रद बातें बताते कहा कि आप मुझे क्षमा करें कि आपको धूप में बिठाया गया है, हम तो छाया में बैठे हैं। दादाजी स्वयं पंखा हाथ में लेकर नीचे उतरकर धूप में बैठे विद्यार्थियों को झुलाने लगे। दादाजी ने अपने एक सेवक से कहा कि शीघ्र ही १००० हजार आइस्क्रीम के पाकेट खरीद कर आओ, इन विद्यार्थियों को खिलाएं। वे बिचारे बहुत समय धूप में बैठे हैं, उन्हें आइस्क्रीम खिलाकर उनकी गर्मी दूर करें।

यह दृश्य देखकर आयोजक, अध्यापकगण एवं अन्य अतिथि आश्चर्य में पड़ गये कि दादा जशन दूसरे के दुख का कितना न अहिसास करते हैं और साथ साथ उस दुख को दूर करने का प्रयास भी करते हैं। जो काम आयोजकों को करने का था, वह काम मुख्य अतिथि दादा जशन ने किया।

सब को स्नेह - सन्मान

दादा जशन के दिल का द्वार सब के लिए खुला रहता है। वे बच्चों को भी प्यार करते हैं तो वृद्धों को भी स्नेह सन्मान देते हैं, सरकारी कर्मचारियों को भी सेवा करने के लिए स्नेह - सन्मान देते हैं। बहिन कृष्णा कुमारी ने मीरा भूमि में विभिन्न समयों पर अनाथ, अपाहिज बच्चों का मेला, डाकियों का मेला, परिचारिकाओं का मेला, वृद्धों का मेला आयोजित करती है। दादाजी स्वयं उनकी सेवा करते हैं, उन्हें स्नेह देते हैं, और उनका उत्साह बढ़ाते हैं।

परिचारिकाओं के मेले में पुणे के कई अस्पतालों की परिचारिकाएं सम्मिलित हुई। दादा जशन ने उन्हें सस्नेह सम्बोधित करते हुए कहा कि आप यदि स्नेह, सहानुभूति के साथ, मुस्कराते मुस्कराते मरीज़ों की सेवा करेंगी, समय पर उन्हें दवाई एवं खाना देंगी तो बीमारों का दुख शीघ्र ही दूर हो जायेगा। दादाजी ने सभी नरसिज को खाना खिलाकर उन्हें प्रसाद व एक एक साड़ी दी।

डाकियों का सन्मान करते हुए दादा जशन ने उन्हें स्नेह से सम्बोधित करते हुए, उनके सेवा की सराहना की। डाकिये गर्मी में, सरदी, वर्षा में

डाक का बोझा उठाकर घर घर में डाक देकर कितनी न सेवा करते हैं! दादा जशन ने उन्हें खाना खिलाकर खर्ची व वस्त्र दिये।

अनाथ - अपाहिज बच्चों के मेले में दादा जशन ने सभी बच्चों को सस्नेह मनोरंन व शिक्षा की कहानी सुनाकर हंसाया, उन्हें खाना खिलाया एवं खर्ची व वस्त्र दिये।

बृद्धो के मेले में दादा जशन ने सभी बूढ़ों - बूढ़ियों को प्रणाम कर स्वागत किया। उन्हें सांतवना, स्नेह, देते उनका उत्साह बढ़ाते हुए कहा कि आप अब अपना समय नाम स्मरण में सफल करें, जीवन की साँझ आ गई हैं। आप क्रोध का त्याग कर सब से मीठा बोलें। दादाजी ने सभी बृद्धों को खाना खिलाकर, उन्हें वस्त्र व अन्य वस्तुएं देकर, उनसे आशीर्वाद लिया।

दादा समाज सुधारक

दादा जशन समाज - सुधारक भी हैं। वे अपने व्याख्यानों में सामाजिक बुराइयों के प्रति श्रोताओं को सजग भी करते हैं। दहेज एवं अन्य छोटे - मोटे कारणों के कारण कन्याओं पर जो अत्याचार हो रहे हैं, दादाजी ऐसे द:खद समाचार सुनकर पिघल पड़ते हैं। वे दहेज के विरूद्ध प्रचार करते हैं और कहते हैं कि जो समाज कन्याओं पर असहनीय अत्याचार करता है, उनका सन्मान नहीं करता वह समाज नष्ट हो जायेगा। यह कौम के गिरावट की निशानी है। आज कई विवाहित बहिने आँसू बहा रही हैं, उनके आँसू पोंछे। कन्याओं के माता पिता कर्ज लेकर बेटियों का विवाह करवाते हैं, फिर भी उनकी बेटियां दुखमय जीवन बिता रही हैं। हम लोभ के वश होकर कन्याओं पर कितना न अत्याचार करते हैं। दहेज का त्याग करें, अपनी बहुओं को बेटियों सरीका स्नेह दें तो आपके घर स्वर्ग हो जायेंगे।

दरिद्र नारायण की सेवा

दीन दुखियो गरीबों की सेवा, भगवान की सेवा है। दादा जशन न केवल विभिन्न नगरों में नाम का संदेश देते हैं, किन्तु वे दीन दुखियों, विधवाओं की देखभाल करने के लिए उनके घरों में जाकर उन्हें सहायता करते हैं, उन्हें स्नेह व सहायता देते हैं। एक बार वे विदेश में कांसा बिलाका में थे, उन्होंने प्रेमियों से कहा कि आज मुझे किसी गरीब के घर में ले चलें। प्रेमी दादाजी को एक गरीब सिन्धी परिवार में लेकर गये। उस घर में पति - पत्नी रहते थे। पत्नी बहुत बीमार थी, चल नहीं

सकती थी, पति उसकी सेवा करता था। वह व्यक्ति अचानक आये हुए सिन्धी भाइयों को अपने घर में देखकर आश्चर्य में पड़ गया और उसने उनसे आने का कारण पूछा। आगुंतक एक प्रेमी ने उसे उत्तर दिया कि आप भाग्यशाली हैं कि आज हमारे साथ आपके घर में दादा जशन आपकी देखभाल करने के लिए आये हैं। जब उस व्यक्ति ने प्यारे दादा जशन का नाम सुना तब वह फूला नहीं समाया और दादा जशन के चरणों पर गिर पड़ा, उसकी आंखों से खुशी के आँसू टपक पड़े। दादाजी ने उसे गले लगाया और उसकी अस्वस्थ पत्नी से बातचीत करते उसे प्यार व आर्शीवाद दिया। दादाजी ने उस बीमार बहिन के तकिये के नीचे कुछ पैसे रख दिये। उस गरीब व्यक्ति ने दादाजी के आभार मानते हुए कहा कि मैंने सुना था कि आप इस नगर में आये हैं। मेरी अभिलाषा थी कि आपका दर्शन करने के लिए उत्सव में आऊँ, किन्तु पत्नी की सेवा के कारण मैं आपके पास नहीं आया। आपने आज मुझ गरीब के घर में पधारकर, अपना दर्शन व स्नेह देकर बड़ी कृपा की है। आपके आभार भूल नहीं सकता, बोलते बोलते वह व्यक्ति रोने लगा। दादाजी ने उसके आँसू पूंछे।



एक बार दादाजी राजकोट में थे। वहाँ बहिन विद्या बाशाराम गोगिया दादाजी को कुछ विधवाओं के घरों में ले गई। गरीब विधवाएं दादाजी को अचानक अपने घरों में देखकर विस्मय में पड गईं। दादाजी ने उन बहिनों को सहायता की, स्नेह दिया और उन्हें प्रणाम कर उन से आशीर्वाद लिया। गांधी नगर कोल्हापुर में भी प्यारे हरिबख्श पंजाबी दादाजी को कुछ गरीब परिवारों में ले गये दादाजी ने सहानुभूति दिखाते उन्हें सहायता दी। दादाजी जहाँ भी जाते हैं वे वहाँ दरिद्र नारायण की

सेवा करते हैं । पुणे में भी वे राम नवमी, जन्माष्टमी, श्री गुरू नानक जयन्ती, साधु वासवाणी जन्म दिन एवं अन्य दिनों पर दरिद्र नारायण की सेवा करते हैं ।

साधु वासवाणी मिशन की ओर से प्रति मास कई गरीब परिवारों को अन्न - धन की सहायता की जाती है ।

दादा जशन दरिद्र नारायण की सेवा को प्रभु की भक्ति मानते हैं ।

दादाजी नम्रता की मूर्ति

साधु टी.एल. वासवाणी की भाँति दादा जशन वासवाणी भी नम्रता की मूर्ति हैं। वे महान विद्वान, ज्ञानवान, आध्यात्मिक मार्गदर्शक, दर्शनिक होते हुए भी कितने न विनम्र हैं। वे सब से स्नेह व नम्रता के साथ मिलते हैं। यदि कोई उनके चरण स्पर्श करता है, तो वे स्वयं सिर नीचे कर उसको प्रणाम करते हैं । वे समय समय पर श्रोताओं को सम्बोधित करते हुए कहते हैं कि आप मुझे कितना न स्नेह, सन्मान व उपहार देते हैं, मैं तो उसके योग्य नहीं हूँ। आपका स्नेह देखकर मेरा सिर झुक जाता है । मैं तो गुरूदेव साधु वासवाणी के द्वार का अयोग्य दास हूँ, आप अपनी योग्यता दिखा रहे हैं। आप में से कुछ प्रेमी मुझ से अधिक योग्य हैं । आप में से कुछ ऐसे भाई बहिने हैं जिनके मन में प्रभु के लिए



प्यास है, प्रेम है, मैं प्रति दिन प्रभु से प्रार्थना करता हूँ मुझे प्यास दें,

अपने चरणों के प्रति श्रद्धा व प्रेम दें। प्रेमियो! मैं आप से आशीर्वाद की भीख मांगता हूँ।

दादा जशन के ये वचन सुनकर कई प्रेमियों की आँखों में आँसू आ जाते है। आज के युग में अहं की भावना बढ़ गई है किन्तु दादा जशन के विचारों, वचनों व व्यवहार में कितनी न नम्रता है! नम्रता मनुष्य का आभूषण है।

मीरा भूमि में बड़े बड़े उत्सव आयोजिन किये जाते है, तब दादाजी प्रवचन करते श्रोताओं से कहते है कि दूर दूर देशों व नगरों से कई प्रेमी इस उत्सव में सम्मिलित हुए हैं, किसी को भी कोई असुविधा हुई हो, या किसी सेवक ने आप से कड़वा बोला हो तो उसके लिए मुझे क्षमा करें। दादा जशन के इन वचनों में कितनी न नम्रता है!

प्रेमीयों की देखभाल करना

दादा जशनजी अपने प्रेमियों की बहुत देखभाल करते हैं। श्री जेठानन्द लालवाणी सहित्यकार एवं सम्पादक थे। वे दादाजी के दर्शन के लिए कभी कभी पुणे में जाते थे। एक बार वे पुणे में गिर पड़े, और उन्हें बहुत चोट लगी, वे बेहोश हो गये। उसे अस्पताल में दाखिल किया गया। दादाजी उनकी देखभाल करने के लिए अस्पताल में गये। दादाजी को देखते ही श्री जेठानन्द की स्मर्ण शक्ति लौट आई, वे होश में आ गये। दादाजी ने उसके सिर पर दया व आशीर्वाद का हाथ फेरते स्नेह दिया। दादाजी दूसरे दिन भी उसकी देखभाल करने के लिए अस्पताल में गये। उन्होंने श्री जेठानंद लालवाणी की पत्नी सुशीला को कुछ नोट देते हुए धीमी आवाज़ में कहा कि अचानक प्यारे जेठानंद को चोट लगी है, इस कारण आपका बहुत खर्चा हुआ होगा, आप ये पैसे स्वीकार करें। दादाजी के ये वचन सुनकर बहिन सुशीला की आँखों में आँसू आ गये।

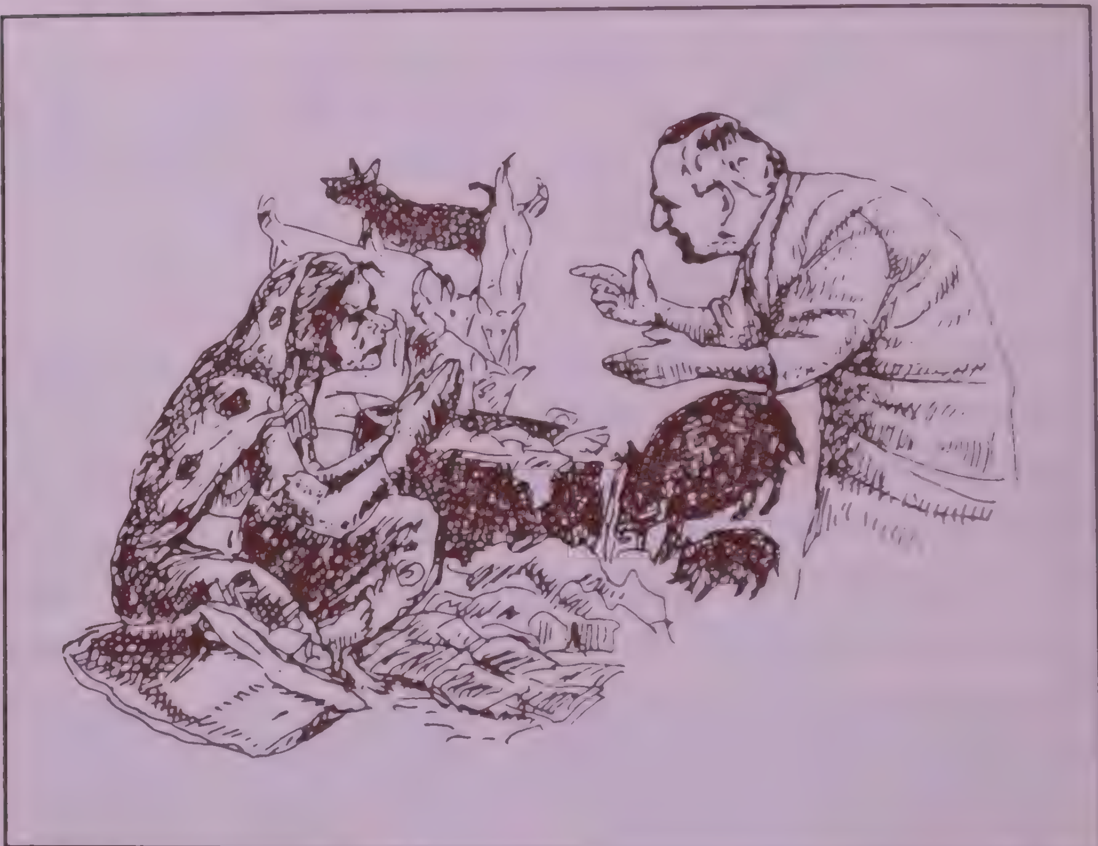
दादाजी का कोई प्रेमी बीमार हो जाता है, तो वे स्वयं उसकी देखभाल करने के लिए उसके घर में या अस्पताल में जाते हैं। बीमार प्रेमी दादाजी का दर्शन कर फूले नहीं समाते।

अपाहिज की सहायता

एक दिन दादाजी ने रास्ते में एक अपाहिज विद्यार्थी को देखा जो लकड़ी के आधार पर पुणे स्टेश की ओर जा रहा था। उस अपाहिज को एक हाथ में पुस्तकों का बोझ और दूसरे हाथ में लकड़ी। उसे

शायद समय पर ट्रेन में जाना था। दादाजी उसका बोझ उठाकर रास्ता पार कर उसे पुणे स्टेशन पर छोड़ने गये। उसी समय दादाजी ने उसे खर्ची भी दी। वह अपाहिज विद्यार्थी एक अपरिचित की सहानभूति व स्नेह प्राप्त कर फूला नहीं समाया।

कचरा ढूंढ़ती बुढ़िया को प्यार



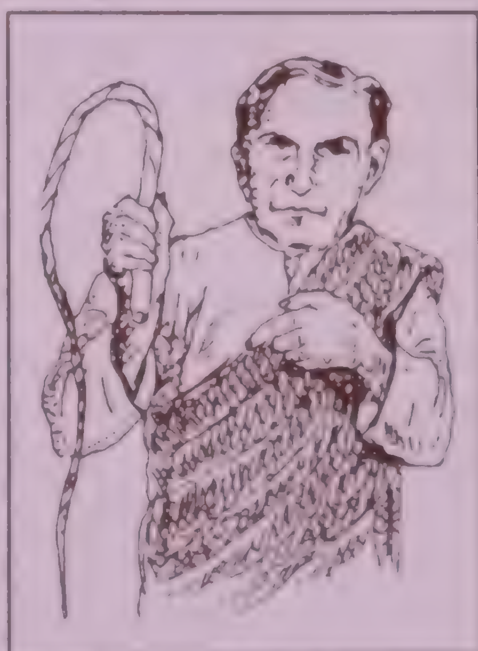
दादा जशन बैंगलोर में थे। वे प्रति दिन सबेरे बगीचे में टहलने के लिए जाते थे । एक दिन वे टहलकर लौट रहे थे, तो अचानक उनकी दृष्टि एक बुढ़िया पर पड़ी, जो कचरे में कुछ ढूंढ़ रही थी। दादाजी ने उसके निकट आकर पूछा कि माँ! आप कचरे में क्या ढूंढ़ रही हैं? बूढ़िया ने कहा, मैं कचरे में प्रयोग की हुइ प्लास्टक की थीलियां ढूंढ़ रही हूँ, वे बेचकर मैं परिवार की पालना करती हूँ। यह सुनकर दादाजी का मन भर आया। वे उस बुढ़िया को मोटरकार मे बिठाकर बंगले पर लेकर आये। दादाजी ने उस बुढ़िया को नाशता खिलाया, उसे मिष्टान का पाकेट व खर्ची दी और उस से आशीर्वाद लिया। बुढ़िया बहुत खुश हुई, उसकी आँखों से आभार के आँसू टपक पड़े।

स्वर्ण भी सेवा के लिए

दादा जशन को जहाँ जो कुछ भी मिलता है वे तत्काल ही वह माया दीन दुखियों की सेवा के लिए अर्पित कर देते है। ३ मई १९९५ में कोलून विदेश में श्री किश्नचन्द पारवाणी एवं उनके सुपुत्रों ने दादा जशन को बड़ी श्रद्धा के साथ स्वर्ण में तौला और व स्वर्ण उन्हें अर्पण किया। तत्काल ही दादाजी ने लाखों रूपयों का वह स्वर्ण परोपकार के कार्यों के लिए साधु वासवाणी मिशन को दे दिया। संत माया का सद् उपयोग करते हैं और हमें भी धन, पदार्थ व श्वासों का सद् उपयोग करने की प्रेरणा देते हैं।

प्रेमी प्रति वर्ष २ अगस्त दादा जशन को जन्म दिन के सम्बंध में लाखों रूपये एवं कई वस्तुएं भेट करते हैं। दादाजी उसी समय ही सर्वस्व सेवा कार्यों के लिए दे देते हैं।

स्वयं को सज़ा



संत सत्पुरूष कभी छोटी मोटी गलती कर बैठते हैं तो वे पश्चाताप कर स्वयं को सज़ा देते हैं। एक बार साँझ के समय दादा जशन मीरा भूमि में अपने कमरे से नीचे आनेवाले थे, प्रेमी उनकी प्रतीक्षा कर रहे थे। उसी समय वे जैसे नीचे आये तो उनके हाथ में एक हन्टर देखकर प्रेमी आश्चर्य में पड़ गये। एक प्रेमी ने साहस बांधकर उनसे पूछा क्या आपने आज किसी को दंडित करने के लिए यह हन्टर लाया है ?

दादा जशन ने गंभीर मुद्रा में कहा कि मेरे प्यारे ! यह हंटर आपको लगाने के लिए नहीं किन्तु स्वयं को दंडित करने के लिए मैने लाया है। प्रेमियों ने दादाजी की यह बात नहीं समझी उन्होंने दादाजी से पूछा कि आप स्वयं को हन्टर क्यों लगाएं ?

दादाजी ने उत्तर देते हुए कहा आज मैंने एक बालिका से कड़वा बोलकर गलती की है। उसके मन को ठेस रसाई है. इसलिए मै इस हन्टर से स्वयं को सज़ा देना चाहता हूँ। अब आप में से कोई प्रेमी मुझे

यह हन्टर लगाये तो मेरे मन का बोझ कम हो जाये।

अपने प्रियतम को कौन हन्टर लगाए ? सब प्रेमी स्तबध रह गये। एक वृद्ध प्रेमी ने हन्टर हाथ में लेकर धीरे से दादा जशन के शरीर को उसका स्पर्श किया। दादाजी ने उसे कहा कि यह हन्टर मुझे जोर से लगाओ। वह व्यक्ति हन्टर रखकर शांत होकर बैठ गया। अब दादा जशन एवं सब प्रेमी गंभीर मुद्रा में थे। यह दृश्य देखकर बहिन शान्ति दादाजी को एक ओर ले गई और विनय की, भाई जशन आज आप यह क्या कर रहे हैं! प्यारे दादा जशन ने वह हन्टर शान्ति के हाथ में देते हुए कहा कि तुम यह हन्टर मुझे लगाओ। बहिन शान्ति वासवाणी ने विवश होकर उसे कांपते हाथों से हन्टर लगाया। यह दृश्य देखकर सभी प्रेमियों की आँखों से आँसू टपके पड़े।

प्यारे दादा जशन ने प्रेमियों को शिक्षा देने के लिए अपनी बहुत छोटी सी भूल के लिए स्वयं को हन्टर लगवाये, जैसे साधु वासवाणी मिशन के सेवक एवं मीरा सत्संग में आने वाले प्रेमी कभी किसी से कड़वा नहीं बोलें। संत स्वयं को दंडित कर हमें शिक्षा देते हैं कि हम किसी के साथ कभी कड़वा नहीं बोलें। ऐसा कोई काम न करें जिससे दूसरे के दिल को ठेस लगे। हम अपने मन, वचन व कर्म से किसी को दुखी नहीं करें।

दूसरों को सिखाना

संत जो कहते हैं, वे पहले स्वयं करके दिखाते हैं। एक बार दादा जशन सिन्धुनगर (उल्हासनगर) में पधारे। वहाँ चारों ओर कचरा पड़ा था, पूरी सफाई नहीं थी। उन्होंने साधु वासवाणी बाग में साधु टी. एल. वासवाणी जन्मोत्सव के सम्बांध में व्याख्यान करते हुए कहा कि मैं यहाँ आता हूँ तो ऐसा समझता हूँ कि मैं अपनी मातृ भूमि सिन्ध में आया हूँ। मेरे भाइयो व बहिनों आप इस नगर को स्वच्छ एवं साफ रखें। आपके नगर में सफाई की पूरी व्यवस्था नहीं है। कचरा होने से आपके स्वास्थ्य पर प्रभाव पड़ेगा। आप स्वावलंबी बनकर अपने घर के बाहर एवं पड़ोस को कम से कम साफ रखें। सिन्धुनगर को सुंदर व स्वच्छ बनायें। उत्सव समाप्ति के पश्चात् दादाजी कुछ प्रेमियों को लेकर हाथों में झाड़ू लेकर एक पड़ोस में जाकर स्वयं झाड़ू लगाकर सफाई करने लगे। कुछ प्रेमियों ने उन्हें प्रार्थना की कि आप महान संत हमारे यहाँ मुख्य अतिथि हैं, हाथों में झाड़ू लेकर सफाई कर हमें शर्मंदा मत करें। हम झाड़ू लगाते हैं। दादाजी ने नगरवासियों को पाठ पढ़ाने के लिए स्वयं झाड़ू लगाकर अमल करने की शिक्षा दी।

बूढ़ों के लिए स्नेह सन्मान



दादा जशन बूढ़े - बूढ़ियों को सन्मान त स्नेह देते हैं। कभी कभी वे स्वयं वृद्धों की देखभाल करने जाते हैं तो कभी उन्हें मीरा भूमि में आमंत्रित कर उनकी सेवा करते, चरण स्पर्श कर आशीर्वाद लेते हैं। वे कहते हैं कि ये बूढ़े नहीं बुद्धिमान हैं। उन्हें जीवन का बड़ा अनुभव है। उनका तिरस्कार नहीं करो, उन्हें प्यार करो। प्राचीन भारत में वृद्धों की श्रद्धा से सेवा की जाती थी, उनका सन्मान किया जाता था किन्तु आज अधिकतर उनका अपमान किया जाता है। जहाँ बृद्ध आशीर्वाद करते हैं, वहाँ किसी वस्तु की कमी नहीं होती है। आप यदि जीवन में कुछ बनना चाहते हैं तो अपने माता - पिता दादा - दादी एवं बड़ों की श्रद्धा से सेवा करें, उनकी आज्ञा का पालन करें।

जीव दया

पूज्य दादा साधु टी .एल वासवाणी की भाँति उनके योग्य शिष्य एवं आध्यात्मिक वारिस दादा जशन भी सारे संसार में जीव दया की ज्योति जगा रहे हैं। वे अपने व्याख्यान द्वारा बार बार अनुरोध करते

हैं कि प्रति दिन लाखों बकरें, बकरियों, मुर्गियों एवं अन्य पशु पक्षियों को काटा जाता है। आप यदि उसी समय उनका करूण क्रन्दन सुनें तो आपकी आँखों से गंगा यमना बह आयेगी। इन पशु पक्षियों के मांस के टुकडों में उनका करूण क्रन्दन समाहित है। आप निरीह पशु पक्षियों पर दया करें। दया ही सब ही धर्मो की नीव है। संत तुलसीदास जी फरमाते हैं :-

दया धर्म का मूल है पाप मूल अभिमान
तुलसी दया न छोड़िये जब तक घट में प्रान



ये पशु पक्षी भी प्यारे प्रभु की मूक संतान हैं। आप उन्हें प्यार करें। जैसे किसी मनुष्य को मारना पाप है, वैसे पशु पक्षियों को मारना भी पाप है। सरकार गुनाहगार को दंडित करती है। सरकार को चाहिए कि जैसे उसने मानव अधिकारों की सूची तैयार की है वैसे पशु - पक्षियों के अधिकारों व सुरक्षा के लिए भी विधि के नियम होने चाहिए। इन निर्दोष पशु - पक्षियों को मारने वालों को सरकार की ओर से दंडित करना चाहिए। मैंने नया चपल पहना, मेरे पाँव में फफोला निकला। उस फफोले के कारण मुझे इतनी तो पीड़ा हुई कि मैं चल नहीं सकता था। जब निरीह पशु - पक्षियों को काटा - मारा जाता



है तो उन्हें कितनी न असहनीय पीड़ा होती है ! स्वास्थ्य की दृष्टि से माँसआहार हानिकारक है । दादाजी बड़ी सावधानी के साथ आगे चलते है जैसे कोई चींटी और जन्य जन्तू पांव तले कुचला न जाये ।

दादा जशन ने देश - विदेश के विभिन्न नगरों में जीव दया का संदेश देकर लाखों लोगों में अंहिसा व करूणा की भावना उत्पन्न की है। उनके प्रभावोत्पादक प्रवचनों से प्रभावित होकर कई लोगों ने माँस भक्षण का परित्याग किया है। दादाजी ने २५ नवम्बार अपने गुरूदेव साधु वासवाणी का जन्म दिन निरामिष दिवस के रूप में मनाने की घोषणा की है। उसी दिन लाखों लोग हिंसा का खाना नहीं खाते ।

मुर्गियों को मुक्त

दादा जशन, हमें तो माया जाल से मुक्त करने के लिए प्रयास करते हैं, किन्तु वे मुर्गियों को भी मुक्त करते है ।११ जनवरी १९८० दादाजी साधु वासवाणी की पुण्य तिथि उत्सव के सम्बांध में गीता सोसाइटी की



ओर जा रहे थे तो रास्ते में उन्होंने एक माई को देखा, वह चार मुर्गियों की टांगे बांधकर उन्हें ले जा रही थी। दादाजी यह दृश्य देखकर थम गये। दादाजी ने उसी माई से चारों मुर्गियों को खरीद कर उन्हें स्वछन्द छोड़ दिया और बहिन धमा लालचंद को उन मुर्गियों को पालने का काम सौंप दिया। दादाजी के मन में पशु पक्षियों के प्रति भी कितना न प्यार है !

पक्षियों के प्रति प्यार



दादा जशन के मन में पक्षियों के प्रति भी प्यार व सहानुभूति है। एक दिन बैंगलोर में वे कहीं से लौट रहे थे, तो उन्होंने दो व्यक्तियों को देखा जो पक्षियों को पिंजरों में बंदकर बेच रहे थे। वे यह दृश्य देखकर उन्होंने उसी समय २५ पक्षी खरीद कर पिंजरों से मुक्त कर उन्हें आकाश में उड़ा दिया।

प्रति वर्ष २ अगस्त दादा जशन के जन्म दिन पुणे में कुछ प्रेमी पंछियों के पिंजरे लेकर आते हैं। दादाजी पंछियों को मुक्त कर आकाश में उड़ाते फूले नहीं समाते। एक बार सांझ को दादाजी मुम्बाई वरली सागर के किनारे टहलने के लिए जा रहे थे, तब मोटर कार में बैठे उन्होंने रास्ते में पक्षियों को पिंजरों में देखा, उन्होंने गाड़ी को थामने के लिए कहा, वे स्वयं गाड़ी से उत्तर कर पक्षियों बेचने वाले के पास आये। उन्होंने सभी पक्षियों को खरीद कर उन्हें मुक्त कर आकाश में उड़ा दिया। दादा जशन न केवल पशु पक्षियों को किन्तु हमें भी माया जाल से मुक्त करते हैं।

२३ मार्च सन् १९९० दादा जशन कोललम्पुर में पधारे। वहाँ जब उन्होंने बहिन रेशमा टहलराम के घर में प्रवेश किया, तो वहाँ उन्होंने देखा कि १२ पक्षी पिंजरों में बंद हैं। दादाजी ने उसी समय बहिन रेशमा से कहा कि प्रभु ने पक्षियों को पंख उड़ने के लिए दिये हैं और तुमने उन्हें बंदी बनाकर रखा है, यह ठीक नहीं है। रेशमा ने दादाजी के हृदय स्पर्शी वचन सुनकर बेटे से कहा कि पिंजरों के द्वार खोल दो। उसी समय ही पिंजरों के द्वार खोले गये पक्षी मुक्त होकर दादाजी को दुआएं देते आकाश की ओर उड़ते चले गये।

कुत्ते पर दया

दादा जशन समदृष्टि है। वे सभी प्राणियों को प्यार करते हैं। एक दिन दादाजी पैदल जा रहे थे, रास्ते में वे एक कुत्ते की करूण आवाज सुनकर रूक गये। वे कुत्ते के निकट आये, उन्होंने देखा कि कोई गाड़ी उसे कुचल गई है। दादाजी ने उस कुत्ते को बीच रास्ते से उठाकर और जगह रखकर, पानी भरकर उसे अपने हाथों से पानी पिलाया।

उसके माथे पर प्यार का हाथ फेरा। कुत्ते की अंतिम घड़ी में, उसके आँखों में आभार की भावना थी। उसी समय दादाजी ने ऐसा अनुभव किया कि श्री कृष्ण उसके सामने प्रेम की बांसुरी बजा रहे हों।

हार्दिक परिवर्तन



१२ जून सन् १९९६ सबेरे दादा जशन शरियोपोर्ट के बगीचे में टहलने के लिए गए। टहलते टहलते उन्होंने देखा कि थोड़ा दूर एक व्यक्ति मछलियाँ फँसा रहा है। दादाजी उसके निकट गये और उस से नाम पूछा। उस व्यक्ति ने कहा मेरा नाम जेसीन है। दादाजी ने मुस्कराते हुए उसे कहा कि मेरा नाम भी जशन है। हम दोनों आपस में भाई हैं। यदि तुम मेरी एक बात मानो तो तुम्हें कहूँ। दादाजी के प्यार भरे व्यवहार से वह व्यक्ति प्रभावित हुआ और उसने कहा कि आप जो कुछ कहेंगे, मैं मानूंगा। दादा जशन ने उसे प्यार से समझाते हुए कहा कि जो प्राण इन मछलियों में हैं, वह प्राण तुझ में और मुझ में है। यदि कोई हमें फंसा कर मारे तो हमारी क्या दुर्दशा होगी! आज से तुम

मछलियां फंसाने का काम बंद करो, दूसरा कोई काम आरंभ करो, जीव दया की ज्योति जगाओ। मछुआ दादा जशन के स्नेह युक्त, मधुर शिक्षाप्रद वचनों से इतना तो प्रभावित हुआ कि उसने मछलियों को नहीं फंसाने का संकल्प किया। दादाजी ने उस मछुआ को गले लगाते खर्ची दी और आशीर्वाद दिया। तत्काल ही मछुए ने मछलियों को तालाब में डालकर मुक्त कर, जीवन दान दिया।

गऊ भक्त

दादा जशन गऊ भक्त हैं। उनके मन में गाय के प्रति श्रद्धा भवाना है। गाय हमारी माता है, देश धर्म का नाता है। दादाजी स्वयं गाय की सेवा करते हैं, अपने हाथों से गैयों को खिलाते हैं। एक बार उन्होंने गाय माता की महिमा गाते हुए कहा कि, मैंने गाय की आंखों में देखा है

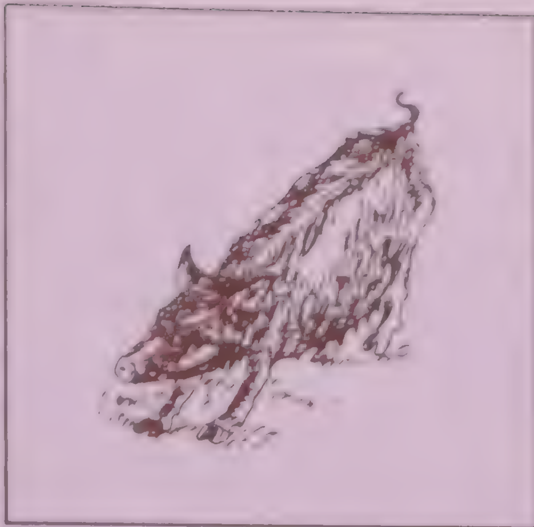


और बार बार अनुभव किया है कि भगवान श्री कृष्ण उनकी आंखों से हमें देखकर आह्वान करते हैं कि दया करें ! दया करें !

सूकरों को स्नेह

१७ सितम्बर १९८० दादाजी क्रीगमोर में पधारे। वहाँ उन्होंने कुछ दिन प्रकृति की गोद में विश्राम लिया। एक दिन वहाँ वे रास्ते में टहल रहे थे तो उन्होंने देखा कि एक व्यक्ति दो सूकरों की टाँगे बांध कर उन्हें ले जा रहा था, दोनों सूकर क्रंदन कर रहे थे। यह दृश्य देखकर दादा जशन का मन भर आया। उन्होंने उस व्यक्ति को बुलाकर पूछा, तुमने इन सूकरों को क्यों बाँधा है ? वह व्यक्ति बोला, मैं सूकरों को पकड़

कर बेचता हूँ, यह मेरा पेशा है। दादाजी ने पूछा इन सूकरों को बेचने से तुम्हें कितने पैसे मिलेंगे ? उस व्यक्ति ने उतर दिया, कम से कम २५० रूपये मिलेंगे। दादाजी ने उसी समय उसे २५० रूपये देकर सूकरों को मुक्त करवाया। वह व्यक्ति आश्चर्य में पड़ गया कि ये कौन हैं जो अपना पैसा खर्च कर भी सूकरों को मुक्त करवाते हैं।



दादा जशन ने उस व्यक्ति को ऐसी शिक्षा दी कि उसने प्रतिज्ञा की वह फिर ऐसा काम नहीं करेगा, दूसरा कोई धंधा व्यवहार करेगा और साथ साथ स्वयं माँस भक्षण भी नहीं करेगा। दादा जशन ने प्यारे आतू रेलवाणी को आज्ञा दी कि इन दोंनो सूकरों को मोटर में चढ़ाकर श्री नील के खेत में छोड़कर आओ, वह उनकी देख भाल करेगा। श्री नील अपने खेत में कई पशुओं की सेवा व देखभाल करता है। दादाजी की आज्ञा अनुसार श्री आतू रेलवाणी दोनों सूकरों को श्री नील के खेत में छोड़कर आया। संत कितने न दयालु होते हैं। दादा जशन का मन दया से ओतप्रोत है। वे पर पीड़ा को स्व पीड़ा समझते हैं।

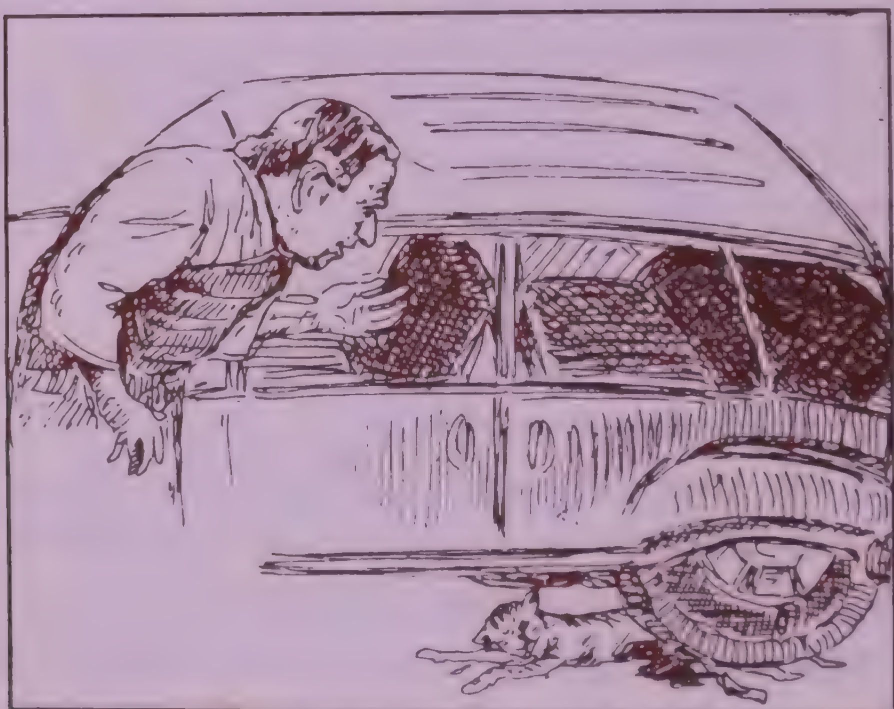
मछलियों को मुक्त

दादा जशन के मन में जलचरों के प्रति भी सद्भावना व स्नेह है। एक दिन दादा वासवाणी को प्रेमी पालकी में बिठाकर टहलने के लिए निकले। वे बंद गार्डन पर आकर नदी के किनारे बैठे। दादा जशन भी उनके साथ थे। अचानक दादा जशन की दृष्टि एक मछुए पर पड़ी जो नदी में मछलियां फंसा रहा था। उसके जाल में कई मछलियां फंसी हुई थीं। दादा जशन की इच्छा हुई कि मछलियों को मुकत किया जाये। उन्होंने मछुआ से पूछा प्यारे इन मछलियों को बेचने से तुम्हें कितने पैसे मिलेंगे ? मछुआ ने उत्तर दिया पचास साठ रूपये मिल जायेंगे। दादा जशन ने उसे पचास रूपये देते हुए कहा कि तुमको आज की कमाई तो मिल गई अब इन फंसी हुई मछलियों को जाल से मुकत कर नदी में डाल दो। उसी समय मछुआरे ने मछलियों को मुकत कर नदी में डाला। मछलियों को जीवनदान मिला। मछलियां जलमें नाच रही थी

। यह दृश्य देखकर दादा जशन अत्यंत प्रसन्न हुए। उन्होंने उस मछुआ को प्रबोध देते हुए कहा कि जल, मछलियों का जीवन है। तुम यह पाप कर्म छोड़कर घर की पालना के लिए कोई धंधा व्यवसाय करो, नौकरी करो ! मछलियां भी प्रभु की संतान हैं। दादा जशन उस मछुआ को दादा साधु वासवाणी के पास ले आये दादा वासवाणी ने उन्हें आशीर्वाद दिया।

२६ मार्च सन् १९८३ दादा जशन हांगकांग में एक नैया में बैठकर समुद्र की सैर कर रहे थे। दादाजी ने वहाँ मछुओं को देखा जो मछलियां फंसा रहे थे। एक मछुए ने मच्छलियां फंसाकर एक ड्रम में डाली थी मच्छलियां ड्रम में पानी के बिना तडप रही थी। यह दृश्य देखकर दादाजी का मन भर आया। दादाजी ने उसी समय उस मछुआ से सब मच्छलियाँ खरीद कर नैया में बैठकर उनको समुद्र में ड़ाल दिया। उन फंसी हुई मच्छलियों को जीवन दान मिला।

बिल्ली के मरने का अफसोस



दादाजी समुद्र का सैर कर जैसे प्यारे प्रकाश की मोटरकार में लौट रहे थे, तब उस मोटरकार के नीचे एक बिल्ली मर गई। दादाजी को बिल्ली की दुर्घटना का बहुत ही दुख हुआ। जब वे प्यारे प्रकाश के घर में लौट आये तब उन्होंने बिल्ली की सद्गति के लिए प्रभु से प्रार्थना की। दादाजी ने बिल्ली की दुर्घटना के कारण रात को भोजन नहीं खाया। दादाजी दूसरों की पीड़ा देखकर द्रवित होते हैं। वे पशु पक्षियों को भी कितना न प्यार करते हैं।

मातृ - पितृ भक्त

प्यारे दादा जशन न केवल ईश्वर भक्त है किन्तु वे मातृ -पितृ भक्त भी हैं। उनके मन में अपने पूज्य पिताश्री पहिलाजराय वासवाणी एवं माताश्री कृष्णादेवी के प्रति अगाध श्रद्धा हैं। ऐसी श्रद्धा हमारे मन मे भी पूज्य पिताश्री एवं माताश्री के लिए होनी चाहिए। हम उनके आशीर्वाद से ही उन्नति की शिखर पर पहुँच सकते हैं। दादाजी अपने पूज्य माता पिता का उल्लेख करते हुए हमें बताते हैं कि उनके शुभ संस्कारों का उनके जीवन पर बड़ा प्रभाव पड़ा है। पिताश्री पहिलाजराय प्रभु श्री राम के अनन्य उपासक, शिक्षा शास्त्री, निष्काम निष्ठावान समाज सेवक थे। वे दया की मूर्ति थे। दादाजी, माता कृष्णा को भाभी शब्द से सम्बोधित करते थे। माता कृष्णा भी ईश्वर आराधिका थी। वह प्रति दिन सबेरे गुरूवाणी का पाठ करती थी। वह आदर्श अध्यापिका थी। उसने अध्यापन कार्य कर परिवार की पालना की। दादाजी कहते हैं बचपन में ही मुझे स्मरण, सेवा स्नेह सहानुभूति, सत्य, सादगी के गुण पूज्य माता - पिता एवं गुरूदेव साधु वासवाणी से प्राप्त हुए। जब माता कृष्णा अस्वस्थ थी, तब दादाजी स्वयं उसकी देख भाल एवं सेवा करते थे। अपने अमृत तुत्य वचनों से माताश्री को प्रसन्न करते थे। हम भी यदि अपना भविष्य उज्ज्वल करना चाहते हैं, तो हम माता - पिता के भक्त बनकर उनकी आज्ञा का पालन करें और श्रद्धा से सेवा करें।

दादा गुरू भक्त

प्यारे दादा जशन भाग्यशाली हैं कि उन्हें अपने परिवार में ही उनके चाचा महान विभूति साधु टी. एल. वासवाणी गुरूदेव के रूप में प्राप्त हुए। उन्हें बाहर सत्गुरू की खोज नहीं करनी पड़ी। बचपन से ही उन्हें गुरूदेव के शुभ संस्कारों व उत्तम विचारों की सम्पति मिली। साधु वासवाणी बचपन से ही उन्हें प्यार करते थे और विद्यार्थी जीवन में ही उनका मार्गदर्शन किया।

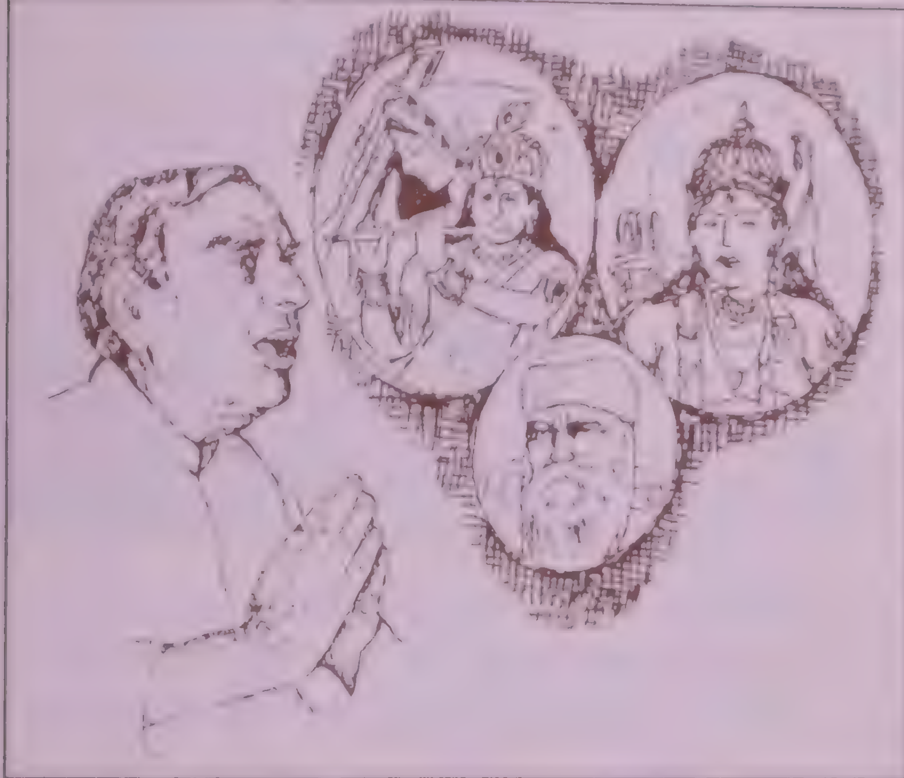
दादा जशन ने अपनी प्रवीणता एवं परिश्रम से बड़ी बड़ी उपाधियां प्राप्त की। वे चाहते तो उन्हें बड़े बाड़े पद मिल सकते थे, किन्तु उन्होंने सारा जीवन गुरूदेव साधु वासवाणी के कमल चरणों में समर्पित किया वे उनकी सेवा करते थे। उनके प्रवचनों का सारांश लिखकर विभिन्न पत्रिवाओं में प्रकाशनार्थ भेजते थे या अपनी संस्था की ओर से प्रकाशित

पत्रिकाओं में प्रकाशित करते थे। वे दादाजी के खान - पान व स्वास्थ्य का बहुत ही ख़्याल रखते थे, चौबीस घंटे समर्पित भाव से उनकी सेवा करते रहे। वे सफर में उनके साथ रहते थे। गुरूदेव साधु वासवाणी उन्हें जो कुछ भी आज्ञा करते थे, वे शीघ्र ही श्रोधार्य करते थे। दादाजी के मन में सत्गुरू के प्रति अगाध भक्ति भावना थी। उनकी गुरू भक्ति एवं श्रद्धा उनके गीतों से भी प्रतिभासित होती है।

गुरूदेव साधु वासवाणी के संग व सान्निध्य में उन्होंने स्मरण, सेवा, स्नेह, सहानुभूति सत्य, सादगी संयम, पवित्रता, मैत्री के गुण ग्रहण किये। गुरूदेव के ब्रह्मलीन होने के पश्चात् उनके विरह में हृदय स्पर्शी गीत लिखे हैं। वे अपने प्रति एक प्रवचन में गुरूदेव साधु वासवाणी का उल्लेख करते हैं, उनके जीवन के प्रेरणादायक प्रसंग सुनाते हैं। वे देश - विदेश के विभिन्न नगरों में जाकर गुरूदेव का संदेश देते हैं। उन्होंने ब्रदर हुड संस्था का नाम परिवर्तित कर उसका नाम साधु वासवाणी मिशन रखा है। वे योग्य गुरू के योग्य शिष्य हैं ।



दादा ईश्वर भक्त



दादा जशन विश्व के महान संत, प्रभु के भक्त हैं। वे भक्ति साधना करते करते स्वयं लाल हो गये हैं। बचपन में ही उनकी पालना परिवार के भक्तिमय वातावारण में हुई। बाल्यावस्था में ही उन्हें उनके चाचा संत दादा साधु वासवाणी सत्गुरू के रूप में प्राप्त हुए। इसलिए पहले से ही उनका मन सांसारिक व्यवहार में नहीं लगा, उनकी वृत्ति नाम से जुड़ी। वे न केवल स्वयं नाम स्मरण करते हैं किन्तु श्रोताओं को भी नाम स्मरण का आग्रह करते हैं। वे बार बार सलाह देते हैं कि अपने अमूल्य श्वास नाम स्मरण में सफल करें।

जिदंगी बे बंदगी शर्मदंगी

दादाजी अब भी बहुत ही समय एकांत में बैठकर भक्ति करते है। वे निराकार ब्रह्म की महिमा गाते हैं तो सगुण साकार भगवान श्री कृष्ण, प्रभु श्री राम एवं अन्य अवतारों व भक्तों के भी गुण गाते है। वे सभी धर्मों, जातियों के संतों की स्तुति गाते है। संत तुलसीदास की भाँति वे सब में प्रभु परमात्मा का दर्शन करते है।

सियाराम मय सब जग जानी,
करऊं प्रणाम जोड़ जुग पानी।

प्रकृति के प्रति प्रेम



दादा जशन बचपन से ही प्रकृति के पुजारी हैं। प्राकृतिक दृश्य देखकर वे आनंद का अनुभव करते हैं। वे अब भी कभी सागर के किनारे जाकर, कभी नदी के किनारे बैठकर लहरों का आनंद लूटते हैं। वे कभी फुलवाड़ी में तो कभी पहाड़ियों पर एकांत स्थल पर बैठकर प्राकृतिक दृश्यों का अवलोकन कर प्रसन्न रहते हैं। वे देश - विदेश के विभिन्न नगरों में जाते हैं तो वहाँ के एकांत स्थतों पर जाकर प्राकृतिक दृश्यों का आनंद लेते हैं। दादाजी पुणे के व्यस्त जीवन और शोर से दूर रहने के लिए कभी लोनावाला, खंडाला में जाकर प्रकृति के गोद में विश्राम करते हैं और प्रकृति से ज्ञान गोष्ठी करते हैं। वे प्राकृतिक वातावरण में ध्यानावस्था में तल्लीन हो जाते हैं। वे हमें भी कहते हैं कि कुछ समय, कुछ दिन सांसारिक वातावरण से हटकर प्रकृति के वातावरण में बिताकर ध्यान व एकांत का जीवन बितायें तो आप स्वस्थ रहेंगे और मन की शान्ति प्राप्त होगी। दादाजी स्वयं मीरा भूमि से टहलने के लिए निकलते हैं। वे टहलते टहलते वृक्षों की छाया में बैठकर ध्यान मूद्रा में आ जाते हैं।



देश भक्त



दादा जशन वासवाणी न केवल अंतर्राष्टीय संत हैं किन्तु देश भक्त भी हैं। प्यारे दादा जशन गुरूदेव साधु टी. एल. वासवाणी के संग में महात्मा गांधी की विचारधारा से प्रभावित हुए। आजादी के आंदोलन के समय स्वदेशी हलचल में वे सक्रय रहे। वे स्वयं चरख़ा चलाते थे, खादी पहनते थे। अब तक वे खादी की सादी पोशाक पहनते हैं। अंग्रेजी के महान विद्वान एवं विश्व के बड़े चिंतक होते हुए उन्होंने अंग्रेजी वेश भूषा का त्याग कर दिया है। उन्होंने आंदोलन के दिनों में स्वतंत्रता एवं राष्ट्र भक्ति के सम्बांध में कई लेख लिखे। उनके मन में देश भक्तों के प्रति श्रद्धा है। वे अपने प्रवचनों एवं लेखों में उनका उल्लेख करते हैं और श्रोताओं में देशभक्ति एवं राष्ट्रीय एकता की भावना का संचार करते हैं।

विश्व शान्ति के उपासक

पूज्य साधु टी. एल. वासवाणी एवं स्वामी विवेकानन्द की भाँति दादा जशन वासवाणी भी विश्व धर्म सम्मेलन में भारत के प्रतिनिधि होकर सम्मिलित हुए हैं। विश्व धर्म सम्मेलन में दादा जशन भारत के ऋषि मुनियों का संदेश सुनाते कहा कि यह सारा संसार हमारा परिवार है। पशु पक्षी भी हमारे इस परिवार के सम्बंधी है, सदस्य है। आज कल चारों ओर अशान्ति और तनाव है। एक जाति दूसरी जाति से, एक देश दूसरे देश से लड़कर नर संहार के साथ अरबों - ख़रबों की

सम्पति नष्ट कर अशान्ति उत्पन्न करते हैं ।

भारत ने सदैव धार्मिक एकता और विश्व शान्ति का संदेश दिया है। भारत एक ऐसा देश है जो सभी धर्मो को सन्मान देता है। यह प्रमाण है कि भारत ने कभी, किसी देश पर पहले आक्रमाण नहीं किया, केवल देश की सुरक्षा की है। भारत में सभी जातियों को धार्मिक आज़ादी है। भारत की संस्कृति, वेदों का संदेश देती है कि परमात्मा एक है। हम सब उसकी संतान हैं। भिन्न भिन्न भाषा भाषी विभिन्न नामों से परमात्मा को सम्बोधित करते हैं, भिन्न भिन्न प्रार्थना करते हैं, किन्तु ध्येय एक ही है। रास्ते अलग अलग हैं और मंज़िल एक है। इसलिए हम धार्मिक संकीर्णता का त्याग कर प्रेम, शान्ति मैत्री व अहिंसा का वातावरण उत्पन्न करें, तो सारा संसार सुखमय बन जाये।



दादा जशन देश - विदेश में विश्व शान्ति, प्रेम, भाई चारे का संदेश देकर दूषित वातावरण को शुद्ध करने का प्रयास कर रहे हैं, मानसिक परिवर्तन कर रहें हैं। इसलिए सन् १९९८ में दादाजी को अमेरिका में यू एन. ओ की ओर से यू थॉट शान्ति पुरस्कार से सन्मानित किया गया।

हिन्दु धर्म के रक्षक



दादा जशन विशाल हृदय हैं। वे सभी धर्मों एवं सभी धार्मिक नेताओं को सन्मान देते है, परन्तु वे अपने हिन्दु धर्म के संरक्षक हैं। दादाजी न केवल भारत में किन्तु विदेश के विभिन्न नगरों में हिन्दु धर्म एवं भारतीय हिन्दु संस्कृति - सभ्यता का संदेश सुनाते हैं और अनुरोध करते है कि आप अपनी सम्यता संस्कृति व धर्म को कभी नहीं भूलें। वे जहाँ तहाँ भारतीय ऋषियों मुनियों का संदेश देते हैं। वे किसी भी धर्म जाति का खंडन नहीं करते है।

वाशिंगटन में स्वामी विवेकानन्द के सर्वव्यापी वेदान्त के संदेश का शताब्दी उत्सव आयोजित किया गया। विश्व के विभिन्न देशों से विद्वान, दार्शनिक एवं अन्य महापुरूष इस उत्सव में सम्मिलिव हुए। उसी अवसर पर दादा जशन ने प्रभावोत्पादक व्याख्यान देते हुए कहा कि स्वामी विवेकानन्द का जन्म ऐसे समय में हुआ जब योरूप एवं अमेरिका के लाखों लोग हिन्दुओं को मूर्ति पूजक समझते थे। स्वामी विवेकानन्द ने विदेश में शेर जैसी गर्जना करते हुए कहा कि हिन्दु धर्म ही एक ऐसा धर्म है जो विश्व का कल्याण चाहिता है, सारे संसार को एक परिवार मानता है। अलग अलग धर्मों ने व्यर्थ तनाव उत्पन्न किया है।

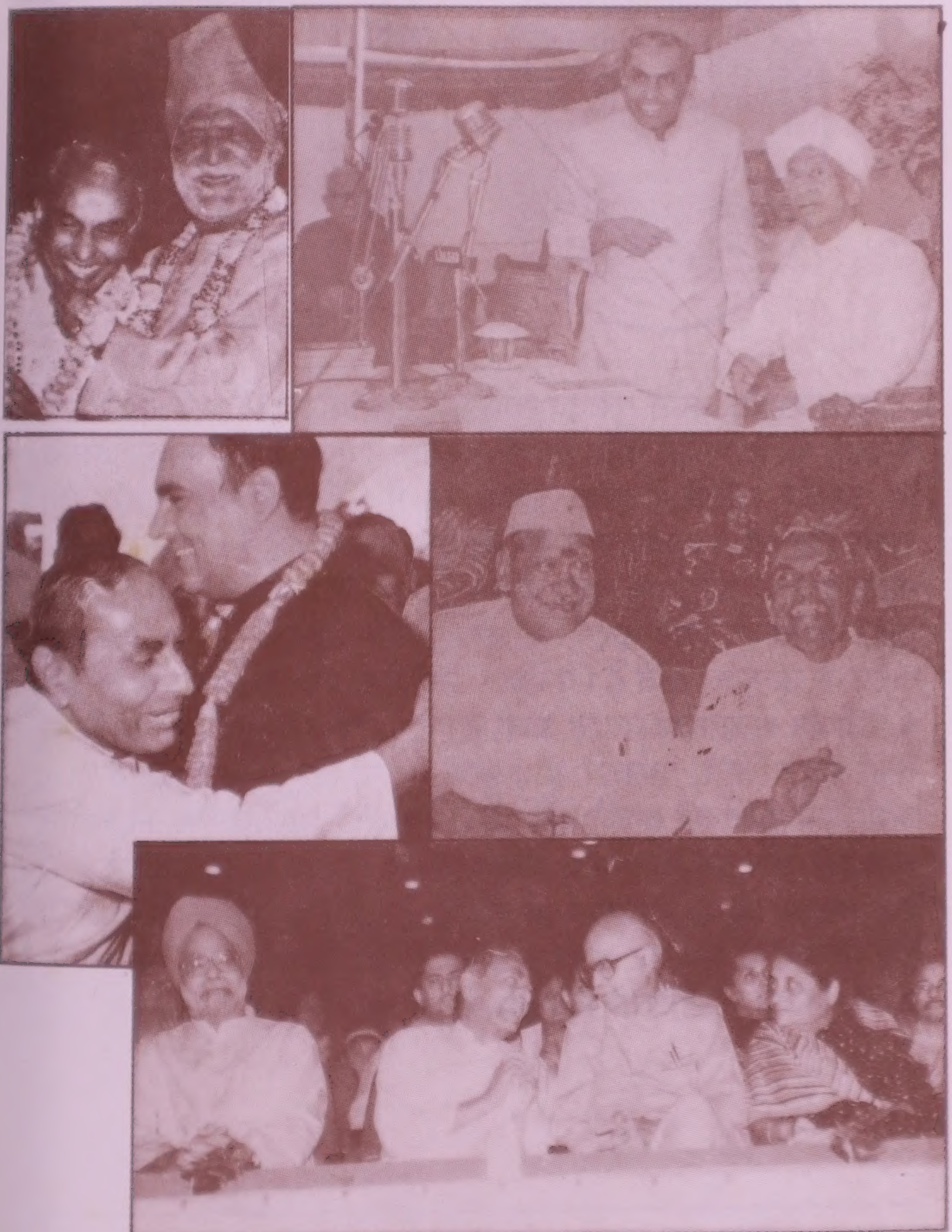
हिन्दू धर्म के अनुसार न केवल मनुष्य परन्तु सभी प्राणियों में परमात्मा व्यापक है। आपस में क्यों लड़ते है! आप अपने अपने धर्म के सिद्धांतों के अनुसार चलें। कोई भी धर्म बैर, विरोध हिंसा नहीं सिखाता। आप यदि हिन्दू हैं तो विदेश में रहकर भी हिन्दू धर्म की रक्षा करें गर्व से कहें हम हिन्दू हैं सभी धर्म प्रेम का पाठ पढ़ाते है। आप जीवन में प्रेम व अहिंसा की ज्योति जगाएं।

महापुरूषों एवं नेताओं से सम्पर्क

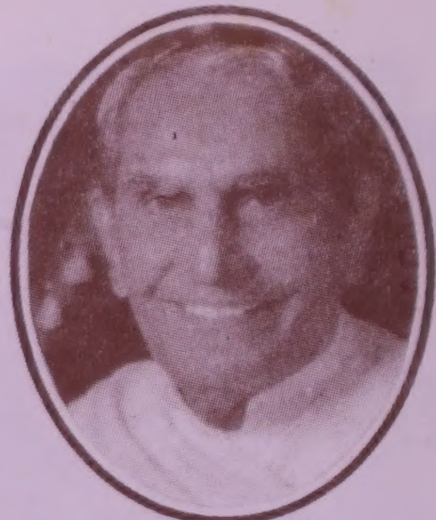


दादा जशन अंतर्राष्ट्रीय संत, महान विद्वान, दार्शनिक व युग दृष्टा व युग सृष्टा हैं, इसलिए कई संत एवं महापुरूष उनसे मिलने के लिए आतें हैं। उनके गुरूदेव साधु वासवाणी भी महान विभूति थे। उनसे मिलने के लिए कई महापुरूष मीरा भूमि में आते थे, इस लिए भी उनका सम्पर्क कुछ बड़ी हस्तियों से रहा। महर्षि कर्वे महान शिक्षा शास्त्री विद्वान, समाज सुधारक, संत मेहर बाबा जिसने कई वर्ष मौन धारण किया, श्री दलाई लामा भारत के भूत पूर्व राष्ट्रपति डाँ राधाकृष्णन पूर्व राष्ट्रपति सरदार जायलसिंघ, पूर्व राष्ट्रपति डाँ शंकर दयाल शर्मा, स्वामी लीलाशाह महाराज, सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज, पूर्व प्रधान मंत्री इंदरा गांधी, पूर्व प्रधान मंत्री राजीव गांधी, भारत के उपप्रधान मंत्री श्री लाल कृष्ण आडवाणी, विधि मंत्री श्री राम जेठमलाणी विभिन्न समयों पर उनके साथ मिलने के लिए मीरा भूमि पुणे में आये। कुछ संतों से उन्होंने ज्ञान - गोष्ठी भी की, और नेताओं से विचारों का आदान प्रदान किया।

दादा जशन महान हस्तियों के साथ

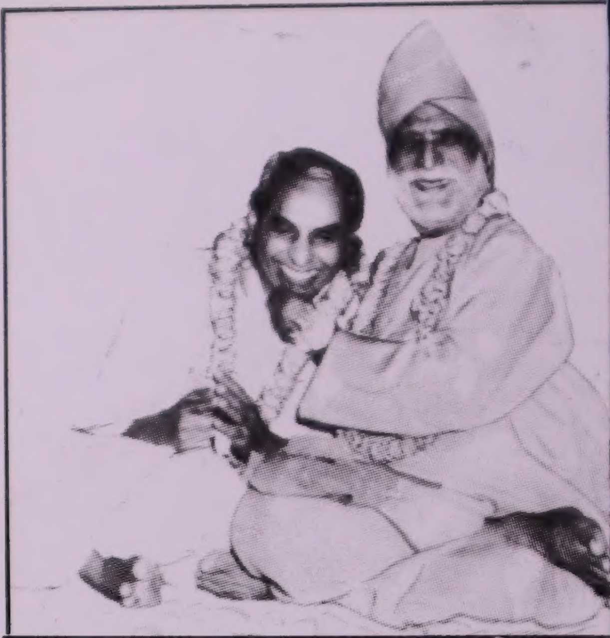


दादाजी प्रेम के अवतार

दादा जशन अपने गुरूदेव साधु टी. एल. वासवाणी एवं अपने इष्ट भगवान श्री कृष्ण की भाँति प्रेम के अवतार हैं। उनका जीवन ही प्रेममय है। उनकी आंखों में इश्क, उनके मन में सभी प्राणियों के प्रति प्रेम उनके विचारों व व्यवहार में प्रेम ही प्रेम समाहित है। जैसे गोपियाँ - ग्वाल भगवान श्री श्याम सुंदर के प्यासी थे वैसे हजारों भाई बहिने प्यारे दादा जशन के दर्शन करने, आशीर्वाद लेने, उनके मधुर वचन श्रवण करने के उत्सुक रहते हैं। वे देश - विदेश में प्रेम का पैग़ाम देकर दया व मैत्री का वातावरण उत्पन्न करते हैं। वे न केवल मानव मात्र को किन्तु सभी पशु पक्षियों, जलचर और पुष्पों, पत्तों को भी प्यार करते हैं। इसलिए वे फूलों को तोड़ने नहीं देते हैं। वे जहाँ जाते हैं, प्रेम की ज्योति जगाते हैं और हमें भी प्रेममय जीवन बिताने की प्रेरणा देते हैं। प्रेम द्वारा कई समस्याओं का समाधान हो सकता है। प्रेम ही आनंद का स्त्रोत है। हम भी प्रेम के पथ पर चलकर, दादाजी की शिक्षाओं को अपनाकर, उनकी जीवन - झाँकियों से प्रेरणा प्राप्त कर जीवन सफल करें।

Designed & Printed by Ram Lalchandani (Art Spot), Mumbai
Tel 4464134 – 4466348 – 4465972 Fax: 4455027





दो महान विभूतियों का स्नेह संगम:
स्त्गुरू स्वामी शान्ति प्रकाश महाराज
एवम् दादा जशन वासवाणी



साधु टी.एल.वासवाणी
अपने परम् प्यारे शिष्य श्री जशन
को स्नेह देते हुए।

दादा जशन वासवाणी प्राकृतिक
दृश्यों का अवलोकन करते हुए,
एक ब्रह्म की सत्ता प्रतिपादित
करते हैं।



दादा जशन वासवाणी दयाल
आशा का मार्गदर्शन करते हुए।